स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

कलीसिया वृद्धि के लिये

नया नियम सर्वेक्षण

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE, BUT PLEASE CREDIT SOURCE

अध्याय 1

नया नियम सर्वेक्षण

यह पाठ्यक्रम नये नियम के सर्वेक्षण का एक परिचय है। इस पाठ्यक्रम में आप यह जानेंगे कि नये नियम की पुस्तकों को किसने लिखा, इन्हें कब और किनके लिए लिखा गया, इन्हें क्यों लिखा गया और ये किस बारे में हैं, इत्यादि।

नया नियम का सर्वेक्षण एक सशक्त एवं लाभदायक अध्ययन है।

1. नया नियम हमें यीशु की क्रूस पर की मृत्यु और मृतकों में से उसके विजयी पुनरुत्थान के बारे में बताता है—और यह कि उसके जीवन और मृत्यु के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए।
2. नया नियम हमें इस सृष्टि के परमेश्वर के बारे में अद्‌भुत जानकारी देता है, और इस बारे में भी कि उसके साथ व्यक्तिगत संबंध का आनन्द लेने के लिये, उसे भानेवाले ढंग में, उसके नियमों के अनुसार कैसे जीना है।

इसे कब लिखा गया था? नया नियम यीशु के जीवन के पश्चात्, लगभग ईस्वी 45 से 95 के दौरान लिखा गया था। यह उस समय की सामान्य बोलचाल की यूनानी भाषा में लिखा गया था।

नया नियम के पांच भाग:

1. **सुसमाचार** हमें यीशु के जन्म, जीवन, सेवकाई, मृत्य और पुनत्थान के संबंध में चार भिन्न, परंतु असंगत नहीं, विवरण देते हैं। सुसमाचार हमें दिखाते हैं कि यीशु कैसे पुराने नियम का प्रतिज्ञात् मसीह था और इसके साथ ही वे शेष नया नियम की शिक्षा के आधार को डालते हैं।
2. **इतिहास:** प्रेरितों के काम पुस्तक यीशु के प्रेरितों के द्वारा किये गये कार्यों का विवरण देती है; प्रेरित वे व्यक्ति थे जिन्हें यीशु ने संसार में उद्धार की घोषणा करने को भेजा था। प्रेरितों के काम पुस्तक हमें कलीसिया के आरंभ और प्रथम शताब्दी में इसके तीव्र विकास के बारे में बताती है।
3. **पौलुस की पत्रियाँ:** पौलुस द्वारा लिखी गई हैं। ये विशिष्ट कलीसियाओं को आधिकारिक मसीही सिद्धान्त और सत्य बताने को लिखे गये पत्र हैं।

4. **सामान्य पत्रियाँः** ये अतिरिक्त शिक्षा और लागूकरण बताते हुये पौलुस की पत्रियों की सहायक ठहरती हैं।
5. **भविष्यद्वाणीः** प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अन्तिम समयों में होने वाली घटनाओं की भविष्यद्वाणी करती है।

विषय सूची

अध्याय 1	अध्ययन पाठ्यक्रम
अध्याय 2	परमेश्वर का शुभ संदेश
अध्याय 3	पुराना नियम और नया नियम के बीच
अध्याय 4	मत्ती
अध्याय 5	मरकुस
अध्याय 6	लूका
अध्याय 7	यूहन्ना, भाग-एक
अध्याय 8	यूहन्ना, भाग दो
अध्याय 9	प्रेरितों के काम, भाग एक
अध्याय 10	प्रेरितों के काम भाग दो
अध्याय 11	रोमियों, भाग एक
अध्याय 12	रोमियों, भाग दो
अध्याय 13	1 कुरिन्थियों, भाग-एक
अध्याय 14	1कुरिन्थियों, भाग दो
अध्याय 15	2कुरिन्थियों, भाग एक
अध्याय 16	2कुरिन्थियों, भाग 2
अध्याय 17	गलातियों
अध्याय 18	इफिसियों
अध्याय 19	फिलिप्पियों, भाग एक
अध्याय 20	फिलिप्पियों, भाग दो

अध्याय 21	कुलुस्सियों
अध्याय 22	1थिस्सलुनीकियों
अध्याय 23	2 थिस्सलुनीकियों
अध्याय 24	1 तीमुथियुस
अध्याय 25	2 तीमुथियुस
अध्याय 26	तीतुस
अध्याय 27	फिलेमोन
अध्याय 28	इब्रानियों
अध्याय 29	याकूब
अध्याय 30	1 पतरस
अध्याय 31	2 पतरस
अध्याय 32	1 यूहन्ना
अध्याय 33	2 यूहन्ना
अध्याय 34	3यूहन्ना
अध्याय 35	यहूदा
अध्याय 36	प्रकाशितवाक्य
अध्याय 37	निष्कर्ष

अध्याय 2

परमेश्वर का शुभ संदेश

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया वचन है।

1. बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया वचन है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के मानव लेखकों को इस तरह से ईश्वरीय रूप में प्रभावित किया कि उन्होंने जो लिखा वह परमेश्वर का वचन था।
2. ''प्रेरणा शब्द का सरल अर्थ "परमेश्वर की श्वास" है; परमेश्वर की प्रेरणा बाइबल को अन्य सभी पुस्तकों के बीच अद्वितीय बनाती है। तीमुथियुस 3:16-17
3. यद्यपि परमेश्वर ने अलग-अलग व्यक्तित्व और लेखन शैली के व्यक्तियों को चुना, तथापि उनके लिखे शब्दों की ईश्वरीय प्रेरणा परमेश्वर ने दी।

बाइबल जीवित, प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखी है। इब्रानियों 4:12

1. परमेश्वर के वचन में वह जीवन-शक्ति है जो किसी भी मानव पुस्तक से भिन्न है। यह न केवल जीवित है, इसमें आत्मिक रूप से मरे हुओं में जीवन डालने की भी सामर्थ है।
2. इसे पढ़ने से हृदय का नवीनीकरण होता है, आत्मिक रूप से मरे हुओं को आत्म्कि जीवन मिलता है और हमारे हृदय के अनिवार्य, आधारभूत रूपान्तरण में हमारे चरित्र में परिवर्तन आता है।
3. बाइबल पढ़ने से हमारे उद्देश्य व इच्छाओं में बदलाव आता है; यह हमें पूरी तरह से धोती और नया बनाती है; और यह हमारी पूर्ण नैतिक मरम्मत व जांच करती है कि किसी भी मानव साहित्य से ऐसा किये जाने की आशा नहीं की जा सकती।
4. बाइबल की भाषा में, यह हमें शुद्ध करती है - कुछ ऐसा जिसे करने का दावा कोई और पुस्तक नहीं कर सकती।
5. मानव हृदय को भेदने के लिए परमेश्वर के वचन से अधिक प्रभावी कोई भी मानव उपकरण या सांसारिक तकनीक नहीं है।

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर कौन है:

1. परमेश्वर कौन है इस बारे में जानकारी पाने का हमारा सबसे उत्तम स्रोत बाइबल है, वह हमें बताती है कि:
   - क. वह अनन्त और अपरिवर्तनीय है — भजन संहिता 90:2
   - ख. वह सर्वशक्तिमान (सर्व-सामर्थी) है — अय्यूब 42:2
   - ग. वह सर्वज्ञ (सर्वज्ञानी) है — भजन संहिता 147:5
   - घ. वह सर्वव्यापी (हर कहीं उपस्थित है) — भजन संहिता 139:7-12
   - ड. वह पवित्र और धर्मी है (पूर्णतया शुद्ध और पाप से अलग) भजन संहिता 145:17
   - च. वह प्रेम है — 1यूहन्ना 4:8
2. बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर को मनुष्यजाति से प्रेम है। यूहन्ना 3:16

बाइबल के दो भाग है, पुराना नियम और नया नियम:

1. पुराना नियम यीशु मसीह के जीवन से पहले लिखा गया था। यह हमें सभी वस्तुओं की सृष्टि के बारे में और परमेश्वर कैसे मनुष्य के साथ चला परन्तु मनुष्य ने उसकी इच्छा के विरुद्ध काम किया, और फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपने पास पुन: वापस लाने के लिए क्या किया इसके बारे में बताती है।
   - क. पुराना नियम में परमेश्वर ने मुख्यत: एक जन समूह, यहूदियों, के साथ काम किया। दु:खद बात यह है कि यहूदी सदैव परमेश्वर से दूर जाकर झूठे देवताओं की आराधना करते रहे।
   - ख. यद्यपि परमेश्वर ने पुराना नियम में मुख्य रूप से यहूदी लोगों के लिए काम किये, तथापि संपूर्ण मानवजाति के लिए उसके प्रेम के कई संकेत मिलते हैं। भजन संहिता 105:1
2. नया नियम यीशु के जीवन के पश्चात् लिखा गया और हमें नई वाचा के बारे में बताता है जिसे हमारे लिए यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उपलब्ध कराया गया। इब्रानियों 9:15

अध्याय 3

पुराना नियम और नया नियम के बीच

परिचयः पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक के लिखे जाने से लेकर यीशु मसीह के जन्म और जीवन तक 400 वर्ष बीत गए थे। इन 400 वर्षों को अन्तर-नियमीय अवधि कहा जाता है, या इसलिये कि इस अवधि में परमेश्वर की ओर से कोई भविष्यद्वाणी का वचन नहीं मिला, ''खामोशी के 400 वर्ष'' कहा जाता है।

फारसी प्रभुत्व से रोमी प्रभुत्व तकः

1. इस अवधि में फिलिस्तीन देश का राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण मुख्य रूप से परिवर्तति हुआ।
2. पुराना नियम के अन्तिम दिनों में, इस्राएल फारसी साम्राज्य के नियंत्रण में था।
   क. फारसियों ने यहूदियों को अपने धर्म का पालन करने की, यहां तक कि अपने मन्दिर का पुर्ननिर्माण करने और आराधना करने की भी, अनुमति दी थी।
   ख. इस अवधि में पुराने नियम के अन्तिम 100 वर्ष और अन्तर-नियमीय अवधि के प्रथम 100 वर्ष सम्मिलित थे। यह शांति और संतुष्टि का समय था।
3. सिकन्दर महान ने फारस को परास्त किया और यूनानी शासन को लाया।
   क. यूनान के लिए आवश्यक था कि उनके द्वारा जीती गई प्रत्येक भूमि पर उनकी संस्कृति को बढ़ाया जाए।
   ख. परिणामस्वरूप, इब्री भाषा के पुराने नियम को यूनानी भाषा में अनुवादित किया गया, इस अनुवाद को सेप्टुआजिंट के रूप में जाना जाने लगा। नया नियम में किये गये पुरना नियम के अधिकांश संदर्भों में सेप्टुआजिंट के ही वाक्यांश का उपयोग हुआ है।
   ग. यद्यपि यूनान ने धार्मिक स्वतंत्रता दी थी, तथापि यूनानी संस्कृति बहुत सांसारिक, मानवतावादी और अधर्मी थी।
4. सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात, यहूदिया पर कई उत्तराधिकारियों ने शासन किया, और अंतिम शासक अन्तिओखस एपिफेनस हुआ।

क. अन्तिओखस ने यहूदियों की धार्मिक स्वतंत्रता को रोक देने से भी अधिक कुछ दिया। ई. पू. 167 के लगभग, उसने याजक वर्ग की उचित शृंखला को उखाड़ फेंका और मन्दिर में अशुद्ध जानवरों ओर अन्यजाति वेदी के द्वारा इसे अशुद्ध किया।

ख. परिणाम स्वरूप, यहूदियों के द्वारा किये गये अन्तिओखस के विरोध ने, उचित याजक-वर्ग को पुनर्गठित किया और मन्दिर को मुक्त कराया।

ग. इसके बाद का समय युद्ध, हिंसा व आपसी मतभेद का था।

5. ई. पू. 63 के लगभग, रोम ने फिलिस्तीन को जीत लिया।

क. इसके कारण अन्ततः रोम ने हैरोदेस को यहूदियों का राजा बनाया।

ख. इसी शासन के कारण यहूदियों पर कर लगाए गए और उन्हें नियंत्रित किया गया, और अन्त में एक रोमी क्रूस पर मसीह को प्राणदण्ड दिया गया।

6. अब यहूदा में रोमी, यूनानी और इब्री संस्कृतियों का मिश्रण था।

फसीसी और सदूकी कौन थे?

1. यूनानी और रोमी व्यवसायों की अवधि में, फिलिस्तीन में दो महत्वपूर्ण राजनैतिक/धार्मिक समूहों का उत्थान हुआ - फरीसी ओर सदूकी।
2. फरीसियों ने मौखिक परंपरा के द्वारा मूसा की व्यवस्था में कुछ और जोड़ दिया और अन्त में वे अपने नियमों को परमेश्वर के नियमों व व्यवस्था से अधिक महत्वपूर्ण मानने लगे थे। जबकि मसीह की शिक्षाएं प्रायः फरीसियों से मेल खाती थीं, वह उनके खोखले तर्कवाद और दया की कमी के विरुद्ध रहा।
3. सदूकी धनी और कुलीन लोगों को प्रतिनिधित्व करते थे।

क. सदूकियों ने, जो सन्हेद्रीन के द्वारा अधिकार चलाते थे, मूसा की पुराने नियम की पुस्तकों के अलावा बाकी सब को ठुकरा दिया था।

ख. उन्होंने पुनरुत्थान पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया था और सामान्यतः वे उन यूनानियों की प्रतिछाया थे जिनकी वे अत्याधिक प्रशंसा करते थे।

अध्याय 4

मत्ती

लेखक और तिथि: विद्वानों का मानना है कि लेखक मत्ती वही चुंगी लेनेवाला था जो यीशु के बारह प्रेरितों में से एक था। उसने इसे लगभग ईस्वी 55-65 के बीच लिखा।

1. मत्ती ने अपने लेखांकन में जो अत्यंत रुचि ली है उसकी ओर ध्यान दें: मत्ती 18:23-24; 25:14-15
2. मत्ती का सुसमाचार बहुत ही सुव्यवस्थित और संक्षिप्त है। कालक्रमानुसार लिखने के बजाय, मत्ती ने इस सुसमाचार को छः परिचर्चाओं के द्वारा क्रम में रखा है।
3. चुंगी लेने वाले आशुलिपि (शार्ट हैंड) में लिख सकते थे, जिसका अर्थ यह हुआ कि मत्ती यीशु के बोलते समय ही, जैसे कि पहाड़ी उपदेश, उसके शब्दों को दर्ज कर सकता था।

लिखने का उद्देश्य:

मत्ती यहूदियों पर यह प्रमाणित करना चाहता था कि यीशु ही प्रतिज्ञात् मसीह है।

1. अन्य दूसरे सुमाचार से कहीं अधिक, मत्ती का सुसमाचार पुराना नियम को अधिक उद्धरित करता है, (60 से भी अधिक बार), यह दिखाने के लिये कि यीशु ने कैसे यहूदी भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों को पूरा किया।
2. मत्ती यीशु की वंशावली को राजा दाऊद से लेकर विस्तार में बताता है, और बोलचाल की कई शब्द-शैलियों का उपयोग करता है जिनसे यहूदी परिचित थे (जैसे मनुष्य का पुत्र, दाऊद का पुत्र)।

मुख्य पद: मत्ती 28:19-20

संक्षिप्त सारांश:

1. मत्ती का सुसमाचार प्रथम दो अध्यायों में मसीह की वंशावली, जन्म और प्रारंभिक जीवन पर चर्चा करता है।
2. अध्याय 3 और 4 यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के आरंभ को बताते हैं।

3. मत्ती मसीह की शिक्षाओं का ''उपदेशों'' के माध्यम से विवरण देता है, जैसे कि:
   – अध्याय 5 से 7 में पहाड़ी उपदेश
   – अध्याय 10 में शिष्यों का मिशन और उद्देश्य सम्मिलित है;
   – अध्याय 13 दृष्टांतों का संग्रह है;
   – अध्याय 18 कलीसिया पर चर्चा करता है;
   – अध्याय 23 से पाखण्ड और भविष्य पर दिये गये उपदेशों का आरंभ होता है।
4. अध्याय 21 से 25 में यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण को बताया गया है जिसका समापन महान आदेश के साथ होता है।

यह दिखाने के लिये कि यीशु ही मसीह है, मत्ती बार-बार पुराने नियम से उद्धरण देता है।

1. बैतलहम में कुंवारी से उसका जन्म — यशायाह 7:14; मीका 5:2
2. हेरोदेस की मृत्यु पश्चात् उसका मिस्र से लौटना — होशे 11:1
3. अन्यजातियों में उसकी सेवकाई — यशायाह 9:1-2; 60:1-3
4. उसके द्वारा देह और प्राण दोनों में चमत्कारिक चंगाइयां — यशार्याह 53:4
5. उसका दृष्टांत में बोलना — भजन संहिता 78:2
6. और यरूशलेम में उसका विजय-प्रवेश — जकयहि 9:9

व्यावहारिक लागूकरण:

1. मत्ती के श्रोता उसके साथी यहूदी थे, उनमें से अधिकांश ने - विशेषकर धार्मिक अगुवों ने, ज़िद में आकर, यीशु को मसीह मानने से इन्कार कर दिया था।
   क. वे एक राजनैतिक मसीह चाहते थे, वह जो उन्हें अत्याचार से छुड़ाकर उनकी सांसारिक अभिलाषाओं को पूरा कर सके।
   ख. यीशु ने उनके कठोर हृदयों और उसे जानने से इन्कार किये जाने के लिए उन्हें डाटा (यूहन्ना 5:38-40)।
2. कितनी बार हम परमेश्वर को अपनी शर्तों पर खोजते हैं? हम परमेश्वर की ओर मात्र सांसारिक शक्ति और लाभ पाने के लिए ही देखने की फरीसियों की गलती को करने का साहस न करें। ऐसा ईश्वर एक मूर्ति से अधिक कुछ नहीं होता है।

3. मत्ती का चरम समापन यीशु के अन्तिम शब्दों को – महान आदेश को – देता है, कि हमें अर्थात् उसके शिष्यों को, ''जाकर सभी जातियों (जन समूहों) को शिष्य बनाना है।''

अध्याय 5

मरकुस

लेखक: यद्यपि लेखक अपना नाम नहीं बताता, सभी समयों के बाइबल विद्वानों का मानना है कि इसका लेखक नया नियम का मरकुस ही था।

लिखने की तिथि: मरकुस का सुसमाचार, नया नियम की प्रथम लिखी पुस्तकों में से एक था, संभवत: ईस्वी 55-59 में लिखा गया था। मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचार एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और इन्हें 'समानांतर सुसमाचार' (Synoptic Gospels) कहा जाता है; ये यूहन्ना के सुसमाचार से महत्वपूर्ण ढंग से भिन्न हैं।

लिखने का उद्देश्य:

1. जब कि मत्ती ने मुख्यत: अपने साथी यहूदियों के लिए लिखा था, ऐसा प्रतीत होता है कि मरकुस अन्यजातियों के लिए लिखा गया था (उन सब के लिए जो यहूदी नहीं थे)।
2. मरकुस चाहता था कि गैर-यूहदियों के पास भी यीशु की कहानी हो कि वह एक सेवक और जगत का उद्धारकर्त्ता है, ताकि गंभीर सताव के समय में उनका विश्वास मज़बूत हो और वे सीख लें कि यीशु का शिष्य होने का अर्थ क्या है।

मुख्य पद:

1. *''मेरे पीछे चले आओ, में तुमको मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा।'' मरकुस 1:17*
2. *''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।'' मरकुस 10:45*

संक्षिप्त सारांश:

1. मरकुस मसीह की शिक्षा से अधिक उसके कार्यों पर बल देता है और उसके जीवन के एक प्रसंग से दूसरे में शीघ्रता से जाता है।
2. मरकुस, मत्ती के समान वंशावली से आरंभ नहीं करता, क्योंकि अन्यजातियों ने उसकी वंशावली में कोई रुचि नहीं ली होती।

3. मरकुस यीशु के बपतिस्मा और सार्वजनिक सेवकाई के बारे में बताता है। उसके पश्चात् यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का विवरण है।
4. शिष्यों ने पतरस की अगुवाई में, एक क्रियाशील घोषणा में यीशु पर अपने विश्वास का अंगीकार किया (मरकुस 8:29-30), जबकि वह कौन है इसे वे उसके पुनरुत्थान के बाद तक भी पूरी रीति से समझ नहीं पाये थे।
5. उसके यरूशलेम की अन्तिम यात्रा के दिनों में, हम उसके शिष्यों को घबराया हुआ, भयभीत व संदेह की अवस्था में देखते हैं। यीशु के पकड़े जाने पर, उनके भाग जाने के कारण वह अकेला ही रह गया था।
6. आगे के घंटों में, जांच-पड़ताल या अभियोग लगाए जाने के समय में, यीशु ने निर्भीकता से कहा था कि वही मसीह है, और यह कि अपनी वापसी पर वह विजयी होकर लौटेगा। मरकुस 14:61-62
7. उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के बाद, सप्ताह के पहले दिन भोर को, कुछ स्त्रियां कब्र पर सुगन्धित द्रव्यों के साथ गईं और उन्होंने वहां पाया कि यीशु जी उठ चुका था। उन्होंने इस आनन्द के सुसमाचार को बताया: ''वह जी उठा है:'' (स्त्रियां सर्व-प्रथम प्रचारक थीं!)
8. मृत्यु पर मसीह की विजय, आशा और उद्धार का वही संदेश शताब्दियों से संसार भर में प्रसारित होता रहा है और आज हम तक भी पहुंचा है, और हमें इसे अगली और अगली पीढ़ी तक आगे लेकर जाना है।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. मरकुस यीशु को दु:ख उठाने वाले सेवक और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जो सेवा करने और हमारे लिए बलिदान होने को आया था। वह हमें वैसा ही करने की प्रेरणा भी देना चाहता था। मरकुस 10:45
2. हमें उसी के समान दूसरों की, वैसे ही महान दीनता और समर्पण के साथ, सेवा करनी है। यीशु ने हमें यह स्मरण रखने का प्रोत्साहन दिया है कि परमेश्वर के राज्य में बड़ा बनने के लिये हमें सभी का सेवक बनना होगा। मरकुस 10:44
3. पहचाने जाने या पुरस्कार पाने की हमारी चाहत से भी बढ़कर हमारा आत्म-बलिदान हो, ठीक वैसे ही जैसे यीशु अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन दे देने में अपमानित भी होने के लिये तैयार था।

अध्याय 6

लूका

लेखक और तिथिः

लूका रचित सुसमाचार का लेखक स्वयं की पहचान नहीं देता, परन्तु लूका 1:1-4 और प्रेरितों के काम 1:1-3 से यह स्पष्ट होता है कि दोनों पुस्तकों का लेखक एक ही है।

1. प्रारंभिक दिनों से विश्वासियों ने यह माना था कि लूका जो एक चिकित्सक और पौलुस का यात्रा सहयोगी था, उसीने प्रेरितों के काम और लूका दोनों पुस्तकों को लिखा है। कुलुस्सियों 4:14
2. पवित्रशास्त्र की पुस्तकों को लिखने वालों में मात्र लूका ही एकमात्र अन्यजाति (गैर-यहूदी) था।

लिखने का उद्देश्यः

1. अन्य दो समानांतर सुसमाचारों मत्ती और मरकुस के साथ-साथ इस पुस्तक का उद्देश्य प्रभु यीशु मसीह और उन सब बातों को प्रगट करना हैं जो यीशु आरंभ से ''करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब-तक ऊपर न उठाया गया।'' प्रेरितों के काम 1:1-2
2. लूका इस कारण से विशिष्ट है क्योंकि वह सतर्कता से लिखा गया इतिहास, एक सुव्यवस्थित विवरण है (लूका 1:3)। लूका जो कि एक वैद्य था, उसके चिकित्सीय मस्तिष्क के अनुसार, उसने उन सभी जानकारियों को दिया है जो अन्य सुसमाचारों में छुट गई हैं।
3. लूका ने महान चिकित्सक यीशु के जीवन का इतिहास यूं लिखा है कि उसकी उस सेवकाई का वर्णन किया है जो उसने अन्यजातियों, सामरियों, स्त्रियों, बच्चों, चुंगी लेनेवालों, पापियों और उन सब के प्रति की थी जो इस्राएल से निष्कासित माने जाते थे, और उसकी दया पर जोर दिया है।

मुख्य पदः

''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का

और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करू। आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।'' लूका 4:18-19, 21

संक्षिप्त सारांश:

1. कुछ लोग लूका को अब तक की लिखी गई सब से सुंदर पुस्तक मानते हैं।
2. इसका आरंभ वह हमें यीशु के माता-पिता, उसके मौसेरे भाई के जन्म (यूहन्ना, बपतिस्मा देनेवाला); बैतलहम की चरनी में उसके जन्म, और मरियम से उसकी वंशावली को बताने के द्वारा करता है।
3. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई को, उसकी दया और क्षमा को, उड़ाऊ पुत्र, धनी व्यक्ति और लाज़र, तथा अच्छे सामरी की कहानियों के द्वारा बताया गया है।
4. जबकि बहुतों ने यीशु पर तथा उसके उस निष्पक्ष प्रेम पर विश्वास किया था जो सभी मानवी सीमाओं को पार कर देता है, अन्य बहुतों ने, विशेषकर धर्मी अगुवों ने, यीशु का विरोध ही किया था।
5. मसीह अपने अनुयायियों को शिष्यता की कीमत जानने को प्रोत्साहित करता है, जबकि उसके शत्रु क्रूस पर उसकी मृत्यु को चाहते हैं।
6. अन्त में, यीशु के साथ विश्वासघात किया गया, उस पर मुकदमा चलाया गया, उसे दण्ड दिया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया। परन्तु कब्र उसे रोक न सकी! अपने पुनरुत्थान से उसने मृत्यु पर विजयी पाई और अपने सभी विश्वास करने वालों को स्वर्ग में अपने साथ के अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा दी है।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. लूका हमें हमारे दयालु उद्धारकर्ता का सुन्दर चित्रण देता है।
   क. यीशु ने निर्धनों और ज़रूरतमंदों से अपना मुंह नहीं मोड़ा; वास्तव में, वे उसकी सेवकाई के मुख्य केन्द्र में थे।
   ख. यीशु के समय में बहुत से निर्धन, कमज़ोर और दलित थे; उनमें अपने भाग्य में सुधार लाने की शक्ति नहीं थी और उन्होंने उत्सुकता से यीशु के इस संदेश को ग्रहण किया कि ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।'' लूका 10:9
2. यही वह संदेश जिसे हमें अपने आस-पास के उन सभी लोगों तक ले जाना

है जिन्हें इसकी अत्यंत आवयकता है।

क. अवश्य है कि मसीही लोग यीशु के उदाहरण पर चलें और उद्धार के शुभ संदेश को आत्मिक रूप से निर्धन व ज़रूरतमंदों तक पहुंचायें।

ख. परमेश्वर का राज्य निकट है, और समय प्रतिदिन घटता जाता है।

3. हमें सभी जातियों में पश्चात्ताप और उसकी क्षमा का प्रचार करना है। लूका 24:45-48

अध्याय 7

यूहन्ना–भाग एक

लेखकः यूहन्ना 21:20-24 लेखक का वर्णन उस शिष्य के रूप में करता है ''जिससे यीशु प्रेम रखता था,'' जिससे माना जाता है कि वह प्रेरित यूहन्ना, जब्दी के पुत्रों में एक, था।

लिखने की तिथिः यह स्पष्ट नहीं है कि यूहन्ना का सुसमाचार ईस्वी 70 में हुये यरूशलेम के विनाश से पहले लिखा गया था या बाद में, परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जात है कि ईस्वी 85-90 तक तो वह लिखा जा चुका था।

लिखने का उद्देश्यः यूहन्ना स्वयं अपने लिखने के उद्देश्य को बताता हैः ...''कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' यूहन्ना 20:31

1. तीन समानांतर सुसमाचारों के विपरीत, यूहन्ना का उद्देश्य मसीह का कालक्रमानुसार विवरण देना नहीं था, परन्तु उसके ईश्वरत्व को दिखाना था।
2. यूहन्ना न केवल दूसरी पीढ़ी के विश्वासियों के विश्वास को दृढ़ करना और दूसरों को विश्वास में लाना चाहता था, परन्तु वह उस समय में फैली रही झूठी शिक्षा में भी सुधार लाना चाहता था।

मुख्य पदः

1. ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। ..... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की महिमा। यूहन्ना 1:1,14
2. ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए।'' यूहन्ना 3:16
3. ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। यूहन्ना 10:10
4. ''यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित

है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती हैं?'' यूहन्ना 11:25-26

5. ''यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।'' यूहन्ना 13:35
6. *''यीशु ने उससे कहा, 'मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।' यूहन्ना 14:6*

संक्षिप्त सारांशः

1. यूहन्ना का सुसमाचार, मसीह के ईश्वरत्व को दिखाने के चिन्हों के रूप में और उसकी सेवकाई को उदाहरण देकर स्पष्ट करने के लिये, मात्र सात चमत्कारों को ही चुनता है। इनमें से कुछ कहानियाँ और चिन्ह केवल यूहन्ना में ही मिलते हैं।
2. चारों सुसमाचारों में उसका सुसमाचार अधिक ईश्वरज्ञान-संबंधि है और प्रायः चारों सुसमाचारों में घटित घटनाओं के पीछे के कारणों को देता है।
3. यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात् आनेवाली पवित्र आत्मा की सेवकाई के बारे में वह अधिक बताता है।
4. इसमें कुछ ऐसे वाक्यांश या शब्द हैं जिनका उपयोग यूहन्ना बार-बार करता है जो उसके सुसमाचार के दोहराए जाने वाले विषयों को दिखाते हैंः विश्वास, गवाही, सहायक, जीवन-मृत्यु, ज्योति-अंधकार, मैं हूं- (जैसे कि यीशु के ''मैं हूं'' कथनों में), और प्रेम।
5. यूहन्ना का सुसमाचार मसीह का परिचय उसके मानव जन्म से नहीं परन्तु ''आदि'' से ''वचन'' के रूप में देता है, जो ईश्वरत्व के रूप में, सृष्टि के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा है (1:1-3), और जो बाद में इसलिए देहधारी बना (1:14) कि निर्दोष और बलिदान के मेम्ने के रूप में हमारे सभी पापों को दूर करें (यूहन्ना 1:29)।

अध्याय 8

यूहन्ना-भाग दो

संक्षिप्त सारांश, क्रमशः

6. यीशु यूहन्ना की पुस्तक में, यहूदी अगुवों को सुधारते हुए (2:13-16); सब्त के दिन चंगाई करते हुये, और स्वयं में परमेश्वर के गुणों का दावा करते हुये, बार-बार उन्हें क्रोधित करता है। यूहन्ना 5:18; 8:56-59; 9:13-16; 10:33
7. यीशु अपने शिष्यों को अपनी आने वाली मृत्यु के लिये और अपने पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के पश्चात् उनकी सेवकाई के लिए तैयार करता है। यूहन्ना 14-17
8. तब वह क्रूस पर हमारे बदले में स्वयं स्वेच्छा से प्राण देता है (10:15-18), हमारे पाप के ऋण को पूरा-पूरा चुकाता है (19:30) ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे वह बचाया जाए। यूहन्ना 3:14-16
9. वह मृतकों में से जी उठता है, अपने सब से अधिक संदेह करनेवाले शिष्य को भी यह विश्वास दिलाता है कि वही परमेश्वर और प्रभु है। यूहन्ना 20:24-29

यीशु के सात ''मैं हूं'' कथनः

यूहन्ना के द्वारा, यीशु का एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में किया गया चित्रण यीशु के साथ ''मैं हूं'' कथनों में अधिक सुस्पष्ट रूप से दिखता है।

1. यीशु ने कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूं,'' जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों की आत्माओं के पोषण के लिये दिया है, ठीक वैसे ही जैसे उसने जंगल में अपनी संतानों को खाने के लिए मन्ना दिया था। यूहन्ना 6:35
2. यीशु ने कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूं,'' वही ज्योति जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने पुराना नियम में अपने लोगों से की थी (यशायााह 60:19-22) और जिसकी परिपूर्ति नये यरूशलेम में होगी जब मेम्ना, अर्थात् मसीह, स्वयं उसकी ज्योति होगा (प्रकाशितवाक्य 21:23)। यूहन्ना 8:12
3. "मैं हूं" के दो कथन यीशु को "अच्छा चरवाहा" और "भेड़ों का द्वार" बताते हैं। इनमें संकेत यीशु के पुराना नियम का परमेश्वर होने की ओर, इस्राएल का

चरवाहा होने की ओर (भजन संहिता 23:1), और भेड़शाला के एकमात्र द्वार, अर्थात् उद्धार का एकमात्र मार्ग होने की ओर है।

4. यीशु ने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं।'' यूहन्ना 11:25
   क. यहूदियों ने पुनरुत्थान में विश्वास किया और वास्तव में, उन्होंने उस सिद्धान्त या मत का उपयोग चालाकी से यीशु से ऐसे कथन कहलाने के लिये किया जिनका उपयोग वे उसके विरुद्ध कर सकें। परन्तु लाज़र की कब्र पर कहा गया उसके इस कथन ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया। वह जीवन और मृत्यु की सामर्थ पर अधिकार रखने का दावा कर रहा था।
   ख. परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई ऐसा दावा नहीं कर सकता।
6. इसी प्रकार से, उसके ''मार्ग, सत्य और जीवन'' होने के दावे से हम देखते हैं कि अनन्त जीवन तक जाने का एकमात्र मार्ग मसीह ही है।
   यूहन्ना 14:6
7. अन्त में, यीशु ने कहा, ''सच्ची दाखलता मैं हूं।'' यीशु स्वयं को इस्राएल जाति से जोड़ता है जिसे पुराना नियम के कई संदर्भों में दाख की बारी कहा गया है। सच्ची दाखलता के रूप में, वह स्वयं को उस ''सच्चे इस्राएल'' के प्रभु के रूप में चित्रित करता है जो उसके पास विश्वास से आएंगे, क्योंकि ''जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं'' (रोमियों 9:6)।
   यूहन्ना 15:1,5

व्यावहारिक लागूकरण:

1. यूहन्ना के सुसमाचार में प्रचार-कार्य के लिये बहुतेरी उपयोगी सामग्री है (यूहन्ना 3:16 संभवत: सर्वपरिचित बाइबल पद है) और सुसमाचार प्रचार के लिये किये जाने वाले बाइबल अध्ययनों में प्राय: इसका उपयोग किया जाता है।
2. (अध्याय 3-4) नीकुदेमुस और कुंए पर स्त्री से हुई यीशु की भेंट में हम यीशु के व्यक्तिगत प्रचार-कार्य के नमूने से बहुत कुछ सीख सकते हैं।
3. अपनी मृत्यु से पूर्व अपने शिष्यों के लिए उसके सांत्वना देने वाले शब्द (14:1-6, 16, 16:33) आज भी हमें उस समय में बड़ी सांत्वना देते हैं जब हमारे मसीह में प्रिय जनों पर मृत्यु आती है, अध्याय 17 में विश्वासियों के लिए ''उच्च महायाजकीय प्रार्थना'' है।

4. मसीह के ईश्वरत्व से संबंधित यूहन्ना की शिक्षाएं (1:1-3, 14; 5:22-23; 8:58; 14:8-9; 20:28 इत्यादि) कुछ ऐसे संप्रदायों की झूठी शिक्षाओं का सामना करने में बहुत सहायक हैं जो यीशु को पूर्ण परमेश्वर से कम देखते हैं।

अध्याय 9

प्रेरितों के काम-भाग एक

लेखक और लिखने की तिथि: जैसे लूका के सुसमाचार के अध्याय में बताया गया, प्रेरितों के काम को डॉ. लूका ने संभवत: ईस्वी 61-64 के बीच लिखा था।

लिखने का उद्देश्य:

1. प्रेरितों के काम पुस्तक को प्रारंभिक कलीसिया का इतिहास देने के लिए लिखा गया था।
2. पुस्तक का जोर पिन्तेकुस के दिन के महत्व पर और यीशु मसीह के प्रभावी गवाह होने के लिये पवित्र आत्मा द्वारा समर्थ किये जाने पर है।
3. प्रेरितों के काम में प्रेरितों के यरूशलेम में, यहूदिया में, सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक गवाह होने का विवरण मिलता है।
4. पुस्तक पवित्र आत्मा के दानों पर प्रकाश डालती है, जो समर्थ करता, मार्गदार्शन देता, सिखाता है और हमारे परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है।
5. प्रेरितों के काम पुस्तक को पढ़ने पर, हम उन बहुत से चमत्कारों की जानकारी से प्रोत्साहन पाते हैं जो इस समय के दौरान पतरस, यूहन्ना और पौलूस द्वारा किये गए थे।
6. प्रेरितों के काम पुस्तक परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता पर और उस परिवर्तन के महत्व पर बल देती है जो मसीह को जानने के कारण होता है।
7. इसमें उन लोगों के भी उल्लेख हैं जिन्होंने उस सत्य को ठुकरा दिया जिसका प्रचार शिष्यों ने प्रभु यीशु के बारे में किया था। अधिकार की लालसा, लालच, और शैतान की ऐसी ही और बुराइयों का इस पुस्तक में उल्लेख है।

मुख्य पद:

1. *''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।'' प्रेरितों के काम 1:8*
2. *''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। प्रेरितों 4:12*

3. *''उन्होंने कहा, 'प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। ''प्रेरितों के काम 16:31*

संक्षिप्त सारांश:

1. प्रेरितों के काम पुस्तक मसीही कलीसिया और यीशु मसीह के शुभ संदेश के प्रसार का, और साथ ही उसके प्रति बढ़नेवाले विरोध का इतिहास बताती है।
2. जबकि यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने और शिक्षा देने के लिये कई विश्वासयोग्य सेवकों का उपयोग किया गया, तथापि, शाऊल, जिसका नाम बदलकर पौलुस रखा गया था, सबसे प्रभावी रहा था।
   क. पौलुस अपने मन परिवर्तन के पहले, मसीहियों को मारने और सताने में बहुत सक्रिय था। दमिश्क के मार्ग पर पौलुस का प्रभावशाली परिवर्तन (प्रेरितों के काम 9:1-31) प्रेरितों के काम पुस्तक का मुख्य अंश है।
   ख. अपने मन परिवर्तन के बाद उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया; उसने अपनी मृत्यु तक परमेश्वर से प्रेम किया और उसकी सेवा की, सामर्थ के साथ उसके वचन का प्रचार किया, उसके उद्धार को वर्तमान समय के टर्की, ग्रीस, इटली और कुछ का मानना है कि स्पेन तक लेकर गया।
3. शिष्य पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ पाकर यरूशलेम में (अध्याय 1-8:3), यहूदिया और सामरिया में (अध्याय 8:4-12:25) और पृथ्वी की छोर तक (अध्याय 13:1-28) मसीह के गवाह बने थे।
4. अन्तिम भाग में पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं (13:1-21:16), यरूशलेम और कैसरिया में उसकी सुनवाई (मुकदमें) (21:17-26:32) और रोम के लिए उसकी अन्तिम यात्रा (27:1-28:31) को सम्मिलित किया गया है।

अध्याय 10

प्रेरितों के काम – भाग दो

पवित्र आत्मा की सामर्थः

1. प्रेरितों के काम पुस्तक परमेश्वर की संतान के जीवनों में और उनके द्वारा पवित्र आत्मा की सेवकाई के बारे में अद्‌भुत शिक्षा को देती हैः
   क. पिन्तेकुस्त के दिन के पहले तक, पवित्र आत्मा की भूमिका कुछ ही लोगों को बाहरी 'अभिषेक' देने तक रही थी (उनमें मूसा [(गिनती 11:17)]; ओत्नीएल [(न्यायियों 3:8-10)]; गिदोन [(न्यायियों 6:34)], और शाऊल [(1 शमूएल 10:6-10] आते हैं)।
   ख. पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों के काम 2), आत्मा अपनी सभी संतानों के हृदयों में रहने (रोमियों 8:9-11; 1 कुरिन्थियों 3:16), उनका मार्गदर्शन करने और उन्हें भीतर से समर्थ करने को आया।
   ग. भीतर निवास करनेवाला आत्मा उनके सब के लिए परमेश्वर का दान है जो विश्वास में उसके पास आते हैं।
2. पौलुस का मन परिवर्तन और जीवन, परमेश्वर की संतान में उसके पवित्र आत्मा की सामर्थ का प्रभावशाली उदाहरण देता है।
   क. पौलुस ने स्वीकार किया कि पुनरुत्थित उद्धारकर्ता से मिलने के पहले, वह अत्यंत जोशीला इस्राएली और ''व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में'' निर्दोष था (फिलिप्पियों 3:6), और उन्हें सताता था जो मसीह में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार की शिक्षा देते थे। परन्तु अपने मन परिवर्तन के बाद, उसने जाना कि उसके विधि-सम्मत सभी प्रयास बेकार थे। फिलिप्पियों 3:8ब-9
   ख. पौलुस परमेश्वर के आत्मा से भर गया और उसके उद्धार को समस्त रोमी साम्राज्य में ले जाने के लिये समर्थ किया गया।

व्यावहारिक उपयोगिताः

1. परमेश्वर साधारण लोगों के द्वारा अद्‌भुत काम कर सकता है जब वह उन्हें अपने आत्मा से भरता और समर्थ करता है।
   क. परमेश्वर ने वास्तव में अशिक्षित मछुवारों और सीधे-सादे व्यवसायियों

के समूह को लिया संसार को उलटा-पुलटा कर देने के लिये उनका उपयोग किया। प्रेरितों के काम 17:6

ख. परमेश्वर ने एक मसीही-विरोधी हत्यारे को लेकर उसे एक महान प्रचारक और मिशनरी में बदल दिया, जिसने नया नियम की आधे से भी अधिक पुस्तकों को लिखा।

ग. ऐसा ही परमेश्वर हमारे द्वारा कर सकता और करता है– हमारे हृदयों को रूपान्तरित करते हुए और पवित्र आत्मा से हमें समर्थ करते हुए और हमें मसीह के उद्धार के शुभ संदेश को फैलाने का उत्साह देते हुए।

घ. प्रेरितों के काम 1:8 के शिष्यों के समान, हमें पवित्र आत्मा द्वारा समर्थ किये जाने की प्रतीक्षा करनी है, इसके बाद उसकी सामर्थ में महान आज्ञा को पूरा करने को जाना है। मत्ती 28:19-20

ड़ हमें हमारे यरूशलेम (हमारे गृह नगर या शहर), हमारे समस्त यहूदिया और सामरिया (हमारा गृह क्षेत्र और आस-पास का क्षेत्र) और पृथ्वी की छोर तक उसके गवाह होना है। प्रेरितों के काम 1:8

2. पौलुस के मिशनरी कार्य से हम इस बारे में कई महत्वपूर्ण शिक्षाओं को देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर की सेवा करें और महान आदेश को पूरा करने के अपने प्रयासों में फलदायी हों:

क. अपनी सेवकाई में पौलुस आबादी वाले केन्द्रों पर अधिक केन्द्रित था, जिनमें इफिसुस, कुरिन्थ, एथेंस और फिलिप्पी शामिल थे। हमें भी नगरों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

ख. पौलुस ने पश्चात्ताप और यीशु मसीह में विश्वास का प्रचार किया।

ग. पौलुस सुसमाचार बताने के लिये सब से पहले आराधनालय में जाता था। प्रेरितों के काम 13:14-15; 14:1; 18:4

घ. पौलुस ने स्वयं को और परमेश्वर के सत्य को प्रस्तुत करने के ढंग को उन लोगों की संस्कृतियों के अनुकूल किया जिन जिनके पास वह पहुंचने का प्रयास कर रहा था।

ड़ पौलुस ने कलीसियाओं की स्थापना की।

च. उसने दूसरों को शिष्य बनाया, जैसे कि प्रिस्किला और अक्विला (प्रेरितों के काम 18:1-3), तीमुथियुस और तीतुस, और उन्हें सेवकाई का नेतृत्व करने तथा बढ़ाने के लिये नियुक्त किया।

अध्याय 11

रोमियों – भाग एक

लेखक और लिखने की तिथि:

वचन रोमियों 1:1, पौलुस को इस पत्री का लेखक मानता है। रोमियों 16:22 यह संकेत देता है कि पौलुस ने अपने शब्दों को लिखने के लिये तिरतियुस नामक एक व्यक्ति का उपयोग किया। रोमियों की पुस्तक संभवत: ईस्वी 56-58 में लिखी गई थी।

लिखने का उद्देश्य:

1. कलीसिया के लिए पौलुस की अन्य सभी पत्रियों के समान, इस पत्री को भी लिखने का उसका उद्देश्य सिद्धांत को सिखाने के द्वारा यीशु मसीह की महिमा करना और उसके पत्र को पानेवाले विश्वासियों को ऊँचा उठाना और प्रोत्साहित करना था।
2. पौलुस ने इस पत्र को जिन्हें लिखा उनमें उसकी विशिष्ट चिंता थी–वे सब जो रोम में रहते थे और ''परमेश्वर के प्यारे और पवित्र होने के लिये बुलाए गए'' थे। रोमियों 1:7
3. इसलिये कि वह स्वयं एक रोमी नागरिक था, उसमें इसी कारण रोम में रहने वाले विश्वासियों के प्रति एक अनोखा उत्साह था। चूंकि वह अब तक रोम की कलीसिया में नहीं गया था, इस पत्र ने उसका परिचय उनसे कराया।

मुख्य पद:

बाइबल की सभी पुस्तकों में से रोमियों में सब से अधिक पूर्ण रूप से विकसित सैद्धान्तिक कथन हैं। पौलुस स्मरण करने और समझने योग्य हमें कई पद देते हुए, खूबसूरती से विश्वास और अनुग्रह के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है।

1. *"मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' रोमियों 1:16*
2. *''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।'' रोमियों 3:23*

3. *''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' रोमियों 5:8*
4. *''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' रोमियों 6:23*
5. *''परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो।'' रोमियों 8:9*
6. *''हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।'' रोमियों 8:28*
7. *''क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी। रोमियों 8:37-39*
8. *''कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।'' रोमियों 10:9-10*
9. *इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। रोमियों 12:1*
10. *''हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है। ''बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।'' रोमियों 12:19*
11. *''अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा से विपरीत, जो तुमने पाई है फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।'' रोमियों 16:17*

अध्याय 12

रोमियों - भाग दो

संक्षिप्त सारांश:

1. पौलुस रोमाचिंत था कि अन्ततः वह इस कलीसिया में सेवा करने योग्य हुआ, और हर कोई इस बात से भली-भांति परिचित था। रोमियों 1:8-15
2. यह पत्र कुरिन्थ से पौलुस की यरूशलेम यात्रा से पहले लिखा गया था जो उसने वहां के विश्वासियों के लिए दिए गए दान को उन तक पहुंचाने के लिये की थी।
3. पौलुस रोम और उसके बाद स्पेन जाना चाहता था (रोमियों 15:24), परन्तु यरूशलेम में बन्दी बनाये जाने के कारण उसकी ये योजनाएं पूरी न हो सकीं। (प्रेरितों के काम 28:16 में हम पढ़ते हैं कि उसे अन्ततः रोम में बन्दी बनाकर ले जाया गया।)
4. रोमियों की पुस्तक मुख्यतः सिद्धान्तों की पुस्तक है। इसका मुख्य विषय धार्मिकता है, और इसे चार भागों में बांटा जा सकता है:
   क. धार्मिकता की आवश्यक, 1:18-3:20;
   ख. धार्मिकता की उपलब्धता, 3:21-8:39;
   ग. धार्मिकता को न्यायसंगत सिद्ध ठहराना, 9:1-11:36;
   घ. धार्मिकता को व्यवहार में लाना, 12:1-15:13
5. वह प्रभावशाली ढंग से बताता है कि वह सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि हर किसी के उद्धार पाने के लिये यही सामर्थ है। रोमियों 1:16
6. पौलुस ध्यान दिलाता है कि परमेश्वर यह मांग नहीं करता कि मसीह के पास आने से पहले लोग अपने जीवनों को ठीक करें। जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। रोमियों 5:8

पौलुस रोम के बहुत से विश्वासियों को यहूदी संदर्भ में संबोधित करता है:

1. पौलुस रोमियों की पुस्तक में, महिमामय सत्य का स्पष्टिकरण करने के लिये, पुराना नियम के कई लोगों व घटनाओं का उपयोग करता है।
   क. अब्राहम के विश्वास ने उसे धर्मी ठहराया। रोमियों 4:1-5
   ख. दाऊद ने अपने पश्चात्ताप के द्वारा अपने विश्वास को प्रदर्शित किया।

रोमियों 4:6-9

ग. <u>आदम</u> के द्वारा मानवजाति में पाप आया, परन्तु यीशु एक नया पवित्र आदम था।

घ. <u>इसहाक</u> प्रतिज्ञा की संतान था और यह दिखाता है कि हम भी, मसीह के द्वारा, परमेश्वर के ईश्वरीय अनुग्रह की प्रतिज्ञा की संतान हैं।

2. 9-11 अध्यायों में पौलुस बताता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को सदा के लिए नहीं ठुकराया है। (रोमियों 11:11-12), परन्तु उन्हें मात्र तब तक 'ठोकर' खाने देता है जब तक कि अधिक से अधिक अन्यजाति उद्धार को न पा लें।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. रोमियों की पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि स्वयं का उद्धार करने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते हैं। हमारे द्वारा अब तक किया गया प्रत्येक ''भला'' काम परमेश्वर के सम्मुख मैले चिथड़ों के समान है।
2. हम अपने अपराधों और पापों में ऐसे मरे हुए हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह और दया ही हमें बचा सकती हैं। परमेश्वर ने, अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर हमारे स्थान पर मरने के लिये भेजने के द्वारा, अपनी इस दया और अनुग्रह को व्यक्त किया है।
3. जब हम अपने जीवनों को मसीह की ओर फेरते हैं तब हम फिर पापी स्वभाव के द्वारा नियंत्रित नहीं रहते, परन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा नियंत्रित होते हैं। रोमियों 8:9
4. यदि हम यह अंगीकार करते हैं कि यीशु प्रभु हैं, और विश्वास करते हैं कि वह मृतकों में से जिलाया गया है, तो हम उद्धार और नया जन्म पाते हैं। रोमियों 10:9
5. हमें परमेश्वर की सेवा और महिमा के लिए अपने जीवनों को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाते हुये जीना है, और वह हमारे जीवनों और हृदयों को अपने स्वभाव में रूपान्तरित कर देगा। रोमियों 12:1-2
6. हमें सुसमाचार से कभी भी लजाना नहीं है। इसके विपरीत, आइये हम सभी यीशु के उस प्रेम और उद्धार के शुभ संदेश को विश्वासयोग्यता से घोषित करें जो सभी विश्वास करनेवालों के लिये नि:शुल्क दिया गया है! रोमियों 1:16

अध्याय 13

1 कुरिन्थियों भाग-एक

लेखक और लेखक की तिथि:
हम 1 कुरिन्थियों 1:1 में पढ़ते हैं कि इस पत्री का लेखक प्रेरित पौलुस है। विद्वानों का मानना है कि इसे ईस्वी 55 के लगभग लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:
कुरिन्थुस नगर में कलीसिया की स्थापना किये जाने के कुछ वर्ष पश्चात्, पौलुस को उस के बारे में कुछ परेशान कर देनेवाली रिपोर्ट सुनने मिली। वे घमण्ड से भर गये थे और अनैतिकता में पड़ गये थे। आत्मिक वरदानों का उपयोग अनुचित ढंग से किया जा रहा था, और मुख्य मसीही सिद्धान्तों को लेकर गलतफहमी थी। पौलुस ने कुरिन्थियों को अपना पहला पत्र इसलिये लिखा था ताकि कुरिन्थुस की कलीसिया को अपने आधार यीशु मसीह की ओर वापस लौटा लाये।

मुख्य पद:

1. क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है। और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' 1 कुरिन्थियों 6:19-20
2. ''क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैंने अपने आपको सबका दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊं।''
3. ''इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पियो, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो। 1 कुरिन्थियों 10:31
4. ''वरदान तो कई प्रकार के हैं, परंतु आत्मा एक ही है'' 1 कुरिन्थियों 12:4
5. ''प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं; वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता

है।'' 1 कुरिन्थियों 13:4-7

संक्षिप्त सारांश:

1. कुरिन्थुस की कलीसिया विभाजनों से परेशान थी। कुरिन्थुस में समूहों में विभाजित विश्वासी कुछ आत्मिक अगुवों के प्रति निष्ठावान थे। 1कुरिन्थियों 1:12
2. पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों को एकता के लिये प्रेरित किया। 1 कुरिन्थियों 3:21-23
3. कलीसिया में बहुत से लोग पापमय/अनैतिक संबंधों को सही ठहरा रहे थे (1कुरि. 5:1-2)। पौलुस ने उन्हें ऐसे पाप करने वालों को कलीसिया से निकालने की आज्ञा दी।
4. कुरिन्थुस के विश्वासी एक दूसरे को न्यायालय में ले जा रहे थे (1कुरिन्थियों 6:1-2)। पौलुस ने उन्हें सिखाया कि अपनी मसीही गवाही को बिगाड़ने के बजाय अन्याय सह लेना अधिक अच्छा होगा। 1 कुरिन्थियों 6:3-8
5. पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को निम्नलिखित विषयों पर निर्देश दिये– विवाह और अविवाहित जीवन (अध्याय 7), मूर्तियों को चढ़ाया जाने वाला भोजन (अध्याय 8 और 10), मसीही स्वतंत्रता (अध्याय 9), स्त्रियों का सिर ढांकना (1 कुरिन्थियों 11:1-10), प्रभु भोज (1 कुरिन्थियों 11:17-34), आत्मिक वरदान (अध्याय 12-14), और पुनरुत्थान (अध्याय 15)।

कलीसिया में झगड़े:

1. कुरिन्थुस के विश्वासियों में अनेक समस्याएं थीं। उनमें फूट, झगड़े, ईर्ष्या थी, कुछ अनैतिकता में रह रहे थे और कुछ विश्वासियों की आत्मिक अपरिपक्वता से संबंधित अन्य समस्याएं थीं।
2. आराधना सभाएं प्राय: अव्यवस्थित होती थीं, कुछ तो पर्वों के दौरान पीने के कारण मतवाले हो जाते थे। 1 कुरिन्थियों 11:21
3. आपस में झगड़े इतने भारी थे कि कुछ विश्वासी दूसरे विश्वासियों को न्यायालय लेकर जा रहे थे। 1 कुरिन्थियों 6:7-8
4. पौलुस विश्वासियों को स्मरण दिलाता है कि वे परमेश्वर का मन्दिर हैं और उसका आत्मा उनमें रहता है–और यह कि उन्हें मसीह में एक होना है। 1 कुरि. 3:16-17, 6:19-20
5. पौलुस विश्वासियों को अपने विश्वास और ''प्रभु के कार्य'' में दृढ़ खड़े रहने के लिये प्रोत्साहित करता है 1कुरि. 15:58

अध्याय 14

1 कुरिन्थियों – भाग दो

आत्मा के वरदानः

1. पूरे तीन अध्याय (12,13 और 14) आत्मिक वरदानों के उपयोग और दुरुपयोग पर हैं।
2. पौलुस स्पष्ट करता है कि पवित्र आत्मा भिन्न लोगों को भिन्न आत्मिक वरदान देता है।
3. वह इस बात पर ज़ोर देता है कि सभी बरदान एक ही आत्मा से आए हैं, और यह कि उन्हें ''सब के लाभ पहुंचाने के लिये'' दिया गया है। 1कुरि. 12:4-7
4. 1 कुरि. 12:8-10 में वह इनमें से कुछ वरदानों के बारे में बताता है।
   क. आत्मा के वरदानों की यह सूची रोमियों 12:6-8 और इफिसियों 4:11 में दी गई सूचियों के समान तो है परन्तु बिल्कुल उनके जैसी नहीं है। तीनों सूचियों के भिन्न होने का तथ्य यह बताता है कि उन्हें सभी-समावेश (सभी वरदानों का समावेश करने वाली) नहीं बनाया गया है।
   ख. आत्मिक वरदानों को इसलिए दिया गया कि ''पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।'' इफिसियों 4:12
   ग. यह आत्मा के फलों से भिन्न है, जिन्हें आत्मा हम में परमेश्वर के चरित्र की प्रतिछाया के रूप में उत्पन्न करता है कि संसार के सामने गवाह बनें। गलातियों 5:22-23
5. कलीसिया की सेवा में हमें अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करना और बढ़ाना है तथा उत्सुकतापूर्वक ''बड़े से बड़े वरदानों की धुन'' में रहना है। 1 कुरि. 12:31अ
   क. "बड़े वरदान" उन्हें माना जा सकता है जिन्हें वरदानों की भिन्न सूचियों में सब से पहले दिया गया है। पहले तीन सूचीगत वरदान प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक के हैं।
   ख. इन तीनों सूचियों में से हर एक में भाषा का वरदान (और भाषा का अर्थ बताना) सब से अन्त में दिया गया है, यह व्यक्त करते हुए कि

इसे आत्मिक वरदानों में सब से कम महत्व देना है।

6. पौलुस आत्मिक वरदानों के तीन अध्यायों के मध्य में हमें परमेश्वर के अलौकिक प्रेम से एक दूसरे को प्रेम करने के ''सबसे उत्तम मार्ग'' को बताता है। 1 कुरिन्थियों 12:31ब
   क. 1 कुरिन्थियों 13 संपूर्ण मानव इतिहास के सब से खूबसूरत लेखाशों में से एक है।
   ख. यह अध्याय स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने हमें जो भी वरदान दिया हो, महत्वपूर्ण बात यह है कि सब कुछ प्रेम से किया जायें

पुनरुत्थान:

1. पौलुस कुरिन्थुस के विश्वासियों को स्मरण दिलाता है कि यीशु मृत्यु पर विजयी हुआ (1 कुरि. 15:3-4), और यह कि मसीह के पुनरुत्थान के कारण ही हमें अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा मिली है। 1कुरि. 15:20-21
2. पौलुस मसीह की संभावित वापसी की ओर संकेत करता है, जिस समय परमेश्वर के सब संतानों का पुनरुत्थान होगा और हम उससे बादलों पर मिलेंगे। 1 कुरि.15:51-53

व्यावहारिक लागूकरण:

1. कुरिन्थुस की कलीसिया जिन समस्याओं और प्रश्नों का सामना कर रही थी वे आज की कलीसिया में भी विद्यमान हैं। आज भी कलीसियाएं फूट, अनैतिकता और आत्मिक वरदानों के उपयोग (और दुरुपयोग) से संघर्षरत् हैं।
2. आज की कलीसियाओं के लिये भी पहले कुरिन्थियों की पुस्तक अच्छे से लागू होती है और हमारी भलाई इसी में है कि हम पौलुस की चेतावनियों पर ध्यान दें और उन्हें स्वयं पर लागू करें।
3. सभी डांट और सुधारों के बावजूद, पहला कुरिन्थियों हमारा ध्यान फिर से वहीं लाता है जहां इसे लगाया जाना चाहिए-अर्थात् मसीह पर!
4. बहुत सी समस्याओं का उत्तर सच्चा मसीही प्रेम ही है (अध्याय 13)।
5. मसीह के पुनरुत्थान की उचित समझ, जैसा अध्याय 15 में प्रगट किया गया है, और इस प्रकार से अपने पुनरुत्थान की भी पूर्ण समझ, उस समस्या का उपचार है जो हमें बांटती और परास्त करती है।

अध्याय 15

2 कुरिन्थियों – भाग एक

लेखक:

2 कुरिन्थियों 1:1 में हम पढ़ते हैं कि 2 कुरिन्थियों पुस्तक का लेखक पौलुस है, जिसके साथ संभवत: तीमुथियुस भी है। इसे कुरिन्थियों को लिखे गये प्रथम पत्र के लगभग दो वर्ष बाद लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. कुरिन्थुस के विश्वासी अपने विश्वास में उथले थे। कुछ पौलुस के आत्मिक अधिकार का इन्कार कर रहे थे। दूसरे कुरिन्थियों में पौलुस ने झूठे शिक्षकों का खण्डन व निन्दा करते हुए अपने बचाव को रखा है। उसने विश्वासयोग्य लोगों को सत्य के प्रति समर्पित बने रहने को कहा और उनके प्रति अपने अथाह प्रेम की पुष्टि की है।
2. दूसरा कुरिन्थियों एक गहरा व्यक्तिगत पत्र हैं–उस जटिल इतिहास के प्रति प्रतिक्रिया है जो पौलुस और उस कलीसिया के बीच थी जिसे उसने कुरिन्थुस में स्थापित किया था। इस पत्र के पीछे की परिस्थितियां, सेवकाई में कठिन और प्राय: पीड़ादायी बने रहनेवाली वास्तविकताओं को दिखाती हैं।
3. पौलुस के अन्य पत्रों से कहीं अधिक यह पत्र उसके पास्टरीय हृदय को दिखाता है।

दूसरा कुरिन्थियों, या तीसरा या चौथा?

बहुतों का यह मानना है कि यह पत्री वास्तव में पौलुस का कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखा हुआ चौथा पत्र है। उनके ऐसा मानने के कारण यह हैं:

1. पौलुस पहले के पत्र में, 1 कुरिन्थियों 5:9 में, एक पत्र के बारे में बताता है, जिसका यह अर्थ है कि 1 कुरिन्थियों वास्तव में कुरिन्थुस के विश्वासियों के लिए दूसरा पत्र था।
2. पौलुस , 2 कुरिन्थियों में तीन बार एक तीसरे, पीड़ादायी पत्र का उल्लेख करता है; ''बड़े कलेश और मन के कष्ट से मैंने बहुत से आँसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा था.....'' (2कुरिन्थियों 2:4)।

3. इस तरह से, 2 कुरिन्थियों उनके लिए चौथा पत्र था।

मुख्य पद

1. *''यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें, पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।'' 2 कुरिन्थियों 3:5*
2. *''परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।'' 2 कुरिन्थियों 3:18*
3. *''इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो सब बातें नई हो गई हैं।'' 2 कुरिन्थियों 5:17*
4. *''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' 2 कुरिन्थियों 5:21*

पौलुस, कुरिन्थुस की कलीसिया का संस्थापक पास्टर:

1. कुरिन्थुस की कलसिया का आरंभ ईस्वी 52 में हुआ जब पौलुस वहां दूसरी मिशनरी यात्रा पर गया था।
2. इस समय में वह डेढ़ वर्ष तक वहां रहा, यह पहली बार थी कि उसे किसी स्थान पर अपनी इच्छा से इतने समय तक रहने दिया गया था। प्रेरितों के काम 18:1-18
3. कुरिन्थियों के इस पत्र में पौलुस अपने चैन और आनन्द को व्यक्त करता है कि उन्होंने उसके ''गंभीर'' पत्र को (जो अब खोया हुआ है) सकारात्मक ढंग से ग्रहण किया था।
4. उस पत्र में उन विषयों को बताया गया था जो कलीसिया को खण्डित कर रहे थे, मुख्यत: झूठे प्रेरितों का आना (2 कुरि. 11:13) जो पौलुस के चरित्र की आलोचना कर रहे थे, विश्वासियों में मतभेद डाल रहे थे और झूठे सिद्धान्त सिखा रहे थे।
5. वहां कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने अपने व्यभिचारी व्यवहार से पश्चाताप नहीं किया था (2कुरिन्थियों 12:20-21)।

अध्याय 16

2 कुरिन्थियों – भाग 2

संक्षिप्त सारांश:

1. कुरिन्थुस की कलीसिया के विश्वासियों का अभिवादन करने, और उन्हें यह बताने के पश्चात् कि अपनी मूल योजना के अनुसार वह उनसे मिलने क्यों नहीं आया था (पद 1:3-2:2), पौलुस अपनी सेवकाई के रूप को स्पष्ट करता है।
2. पौलुस, तीतुस से यह जान कर अति आनन्दित था कि अधिकांश कुरिन्थियों ने पौलुस के विरुद्ध किये अपने विद्रोह से पश्चात्ताप किया था। (2 कुरि. 2:12-13; 7:5-9)। प्रेरित इसके लिये उन्हें प्रोत्साहित करते हुये अपने सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। (2 कुरि. 7:3-16)
3. पौलुस अपनी प्रेरिताई को साबित करना चाहता था, क्योंकि कलीसिया में से कुछ लोगों ने उसके अधिकार पर प्रश्न किये थे (2 कुरि. 13:3)।
4. विश्वासयोग्यता और मसीह के द्वारा विजय ये कलीसियाओं के लिए उसकी सेवकाई के प्रमाण थे (2:14-17)।
5. वह मसीह की धार्मिकता की महिमामय सेवकाई की तुलना व्यवस्था की ''दोषी ठहराने वाली सेवकाई'' से करता है (पद 3:9) और तीव्र सताव के बावजूद अपनी सेवकाई की वैधता को प्रमाणित करता है (14:8-18)।
6. अध्याय 5 मसीही विश्वास के आधार की रूपरेखा को देता है - नया स्वभाव (पद 17) और हमारे पापों के बदले में मसीह की धार्मिकता की अदला-बदली (पद 21)।
7. अध्याय 6 और 7 में पौलुस अपना और अपनी सेवकाई का बचाव करते दिखता है, कुरिन्थियों के प्रति अपने निष्कपट प्रेम का पुनः आश्वासन देता है और उन्हें पश्चात्ताप व पवित्र जीवन जीने के लिये प्रोत्साहित करता है।
8. अध्याय 8 और 9 में, पौलुस कुरिन्थुस के विश्वासियों को मकिदुनिया के भाइयों के उदाहरण पर चलने और ज़रूरतमंद धर्मी जनों की उदारतापूर्वक सहायता करने के लिये प्रेरित करता है। वह उन्हें अनुग्रहपूर्वक देने के सिद्धान्तों और प्रतिफल को सिखाता है।
9. पौलुस अपने पत्री का समापन अपने अधिकार को (अध्याय 10) और झूठे प्रेरितों की ओर से हिंसक विरोध का सामना करने में उनकी विश्वासयोग्यता

के प्रति अपनी चिन्ता को दोहराते हुए करता है। अपनी योग्यताओं और मसीह के लिए दु:ख उठाने पर अनिच्छापूर्वक घमण्ड करने के कारण वह स्वयं को ''मूर्ख'' कहता है (अध्याय 11)।

10. अपनी पत्री का समापन वह अपने स्वर्ग के दर्शन के अनुभवों का वर्णन करने से और "देह में कांटा" का उल्लेख करने से करता है जो परमेश्वर के द्वारा उसे दीन बनाने के लिये दिया गया था (अध्याय 12)।
11. अन्तिम अध्याय में उसका कुरिन्थियों को अपनी स्वयं की जांच करने के लिये दिया गया प्रोत्सान मिलता है और वह प्रेम और शांति के अभिवादन के साथ अन्त करता है।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. पौलुस की पत्रियों में यह एक पत्र उसके जीवन-वृत्तांत को अधिक बताने वाला और सैद्धान्तिक शिक्षा को कम देने वाला है। यह किसी और से अधिक पौलुस के व्यक्तित्व और सेवकत्व के बारे में अधिक बताता है।
2. ऐसा कहे जाने के बाद, इस पत्र से ऐसी कुछ बातें हैं जो हम अपने लिये लेकर अपने जीवन में आज लागू कर सकते हैं।
3. उनमें से एक बात भण्डारी होना है, न मात्र धन के, परन्तु समय के भी। मकिदुनिया के लोगों के समान, हमें भी न केवल अपना सब कुछ परन्तु स्वयं को भी प्रभु को सौंपना है।
4. उसे वास्तव में हमारे धन की आवश्यकता नहीं। वह सर्वसामर्थी है! वह ऐसा हृदय चाहता है, जो सेवा करने और प्रसन्न करने और प्रेम करने की लालसा रखता हो।
5. भण्डारीपन धन से कहीं अधिक है। जी हां, परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम अपनी आय का दसवां भाग दें, और हमारे उसे देने पर वह हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। तथापि इससे भी अधिक कुछ है। परमेश्वर हमारा 100 प्रतिशत चाहता है। वह चाहता है कि हम उसे अपना सब कुछ दें। वह सब कुछ जो हम हैं।
6. हमें अपना जीवन अपने पिता की सेवा करते हुए बिताना है। हमें परमेश्वर को न मात्र अपने वेतन में से देना है, परन्तु हमारा जीवन उसका प्रतिबिंब होना चाहिए।

अध्याय 17

गलातियों

लेखक और लिखने की तिथि:
गलातियों 1:1 प्रेरित पौलुस को स्पष्ट रूप से लेखक बताता है। इसे ईस्वी 48 और 55 के बीच के किसी समय में लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:
पौलुस गलातियों को उनके विश्वास में, विशेषकर व्यवस्था के कामों के बिना मात्र विश्वास से धर्मी ठहराए जाने के संबंध में, प्रोत्साहित करना चाहता था।

मुख्य पद:

1. *''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। गलातियों 2:20*
2. *''व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।'' गलातियों 3:11*
3. *''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। गलातियों 5:22-23*

संक्षिप्त सारांश:

1. विश्वास द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने का परिणाम आत्मिक स्वतंत्रता है। गला. 5:13

क. पौलुस ने गलातियों से अपनी स्वतंत्रता में स्थिर रहने, और ''दासत्व के जूए में'' (जो कि मूसा की व्यवस्था है) फिर से न जुतने की विनती की।

ख. ऐसी स्वतंत्रता व्यक्ति को जीवन के संघर्षों से नहीं बचाती है। तथापि, आत्मा परमेश्वर का फल उत्पन्न करता है, जैसे कि प्रेम, आनन्द और शांति। गलातियों 5:22-23

2. यदि पौलुस मात्र विश्वास से ही धर्मी ठहराए जाने के अपने तर्क में सफल न हुआ होता, तो मसीहियत यहूदीवाद के अन्तर्गत ही एक पंथ बना रह जाता, बजाय इसके कि उद्धार का विश्वव्यापी मार्ग बने। इसलिए, गलातियों मात्र लूथर की पत्री ही नहीं है; यह प्रत्येक विश्वासी की पत्री है जो मसीह का अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में अंगीकार करता है। गलातियों 2:20

गलातियों की पत्री और याकूब की पत्री का संदेश ऐसी दो सच्चाइयों को स्पष्ट करतीं हैं जो परस्पर विरोधी जान पड़ती हैं, जबकि वास्तव में वे एक दूसरे की पूरक हैं।

1. याकूब इस बात पर बल देता है कि विश्वास कर्मों से अपने अस्तित्व को प्रमाणित करता है, जबकि गलातियों में पौलुस ''मात्र विश्वास'' पर बल देता है। फिर भी वे दोनों इस बात पर जोर देते है कि परमेश्वर के अनुग्रह से व्यक्ति के परिवर्तन की आवश्यकता है। याकूब 1:18, गलातियों 5:13
2. सिक्के के दो पहलुओं के समान, मसीही सत्य के ये दोनों पहलू एक दूसरे के साथ-साथ चलने चाहिए।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. गलातियों की पुस्तक के प्रमुख विषयों में से एक 3:11 में मिलता है: ''धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।'' हम न मात्र विश्वास से बचाए गए हैं, परन्तु हम दिन प्रतिदिन, क्षण प्रतिक्षण, उस विश्वास से और उसके द्वारा जीवित रहते हैं। यूहन्ना 3:16 इफिसियों 2:8-9
2. विश्वास कोई ऐसी बात नहीं है जिसे हम अपने आप पैदा कर सकते हैं–यह परमेश्वर का दान है; कामों का नहीं– परन्तु यह हमारा उत्तरदायित्व और आनन्द है कि अपने विश्वास का प्रदर्शन करें ताकि इस के द्वारा दूसरे हम में मसीह के फल को देख सकें। मत्ती 7:16-20
3. सभी मसीहियों को अपने में जो उद्धार दिलाने वाला विश्वास पाया जाता है उसे व्यक्त करने में परिश्रमी रहना चाहिए ताकि दूसरे हममें मसीह को देखें और ''पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।'' मत्ती 5:16

अध्याय 18

इफिसियों

लेखक और तिथि:
पौलुस ने इस पत्री को, संभवत: ईस्वी 60-63 के आस-पास लिखा था।

लिखने का उद्देश्य:

1. इस पत्री का उद्देश्य एक परिपक्व होते जा रही कलीसिया को स्थिर और सुसज्जित करना है।
2. पौलुस विशेषत: विश्वासियों में फूट या विभाजन को लेकर चिन्तित था।
3. उसने मसीही परिवारों, सेवकों और स्वामियों के लिए भी व्यावहारिक शिक्षा दी।

मुख्य पद:

1. *''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।'' इफिसियों 2:8-10*
2. *''एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सबके अंदर और सबके मध्य में और सब में है।'' इफिसियों 4:4-6*
3. *''इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।'' इफिसियों 6:10-12*

संक्षिप्त सारांश

1. इफिसियों की पुस्तक के अधिकांश भाग में सिद्धान्त पाये जाते हैं। इस पत्री

की आधी शिक्षा हमारे मसीह में स्थिर रहने से संबंधित है और शेष आधी हमारी दशा पर इसके प्रभावों को बतलाती है। प्राय: इस पुस्तक को सिखानेवाले सभी आधारभूत निर्देशों की उपेक्षा करते हुये सीधे अन्तिम अध्याय पर पहुंच जाते हैं। यही अध्याय धर्मी जनों के युद्ध या संघर्ष पर बल देता है। तथापि, इस पत्री में पाये जाने वाले विषय-सामग्री से पूर्णतया लाभान्वित होने के लिए, व्यक्ति को इस पत्र में दिये पौलुस के निर्देश के आरंभ से आरंभ करना चाहिए।

2. सर्वप्रथम, मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें पूरी तरह से यह समझना है कि परमेश्वर हमें क्या घोषित करता है। हमें उस कार्य के ज्ञान की भी पूर्ण शिक्षा ले लेना चाहिये जो परमेश्वर ने समस्त मानवजाति के लिए पूरा कर दिया है। इसके पश्चात्, हमें वर्तमान अस्तित्व और चाल-चलन में अभ्यस्त और दृढ़ हो जाना चाहिये। यह तब तक जारी रहना चाहिए जब तक कि हम मनुष्यों की हर एक शिक्षा और धूर्तता की प्रत्येक आत्मा के सामने डगमगाना या लड़खड़ाना ना छोड़ दें।

दो बिल्कुल नई धारणाएं:

1. पौलुस इफिसियों में एक चौकानेवाले नये (उस समय के लोगों के लिए) ''रहस्य'' को बताता है, कि अन्यजाति विश्वासी मसीह यीशु की प्रतिज्ञा में बराबर के भागी हैं (इफि 3:6)। इस समय तक परमेश्वर के यहूदी अनुयायियों ने सदा यही माना था कि मात्र वे ही परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। व्यवस्थाविवरण 7:6
2. पौलुस कलीसिया के रहस्य को भी ''मसीह की दुल्हन'' के रूप में बताता है, यह विषय पुराने नियम में पहले कभी सुना नहीं गया था। इफि. 5:25-27

व्यावहारिक लागूकरण:

1. इफिसियों की पुस्तक, मसीही जीवन में सही सिद्धान्त और सही अभ्यास के बीच के संयोजन पर दृढ़तापूर्वक बल देती है।
2. बहुत से लोगों ने ''थियोलोजी'' (ईश्वर-धर्म-ज्ञान) की उपेक्षा की है और इसके विपरीत उन्होंने मात्र उन्हीं बातों पर विचार-विमर्श करना चाहा जो ''व्यावहारिक'' हैं। इफिसियों में, पौलुस यह तर्क देता है कि थियोलोजी ही व्यावहारिक है।
3. परमेश्वर की जो हमारे लिये इच्छा है उसे अपने जीवन में व्यावहारिक रूप

से जीने के लिये, अवश्य है कि हम पहले समझ लें कि सैद्धांतिक रूप से हम मसीह में कौन हैं।

अध्याय 19

फिलिप्पियों भाग एक

लेखक:

जबकि गलातियों और फिलिप्पियों को पौलुस ने लिखा है, यह बात स्पष्ट है कि फिलिप्पियों और कुलुस्सियों को पत्र लिखने में तीमुथियुस ने पौलुस की सहायता की थी।

तिथि और लिखने का उद्देश्य:

1. बाइबल विद्वानों का मानना है कि फिलिप्पियों की पत्री को ईस्वी 61 के लगभग लिखा गया था, जिस समय पौलुस रोम के बंदीगृह में था। यह यीशु के स्वर्गारोहण के तीस वर्ष पश्चात् और पौलुस के फिलिप्पी में पहली बार प्रचार किये जाने के दस वर्ष पश्चात् की बात है। फिलिप्पियों 1:13; 4:22
2. फिलिप्पियों की पत्री में धर्मी जनों को संबोधित किया गया था–जिनमें बिशप (प्राचीन) और डीकन्स (सेवक) भी शामिल हैं (फिलि. 1:1)। इस तथ्य से अनुमान लगाया जाता है कि उस समय तक कलीसिया सुव्यवस्थित रूप से स्थापित हो चुकी थी। (प्रेरितों के काम 16:12-40 के वृत्तांत के अनुसार, पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान वहां पहली बार कलीसिया की स्थापना की गई थी।)
3. संभवत: इस पत्री को लिखे जाने का मुख्य कारण फिलिप्पी की कलीसिया से प्राप्त धन की भेंट के प्रति आभार व्यक्त करना था। फिलिप्पियों 4:18
4. यह एक कोमल (सौम्य) पत्र है जो उस मसीही समूह को लिखा गया जो पौलुस को विशेष रूप से प्रिय थे, इसमें सैद्धान्तिक कमियों के बारे में बहुत ही कम बताया गया है।

मुख्य पद:

1. *''क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।'' फिलिप्पियों 1:21)*
2. *''परन्तु जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।'' फिलिप्पियों 3:7*

3. *''निशाने की ओर दौड़ा जाता हूं, ताकि वह ईनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। फिलिप्पियों 3:14*
4. *''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।'' फिलिप्पियों 4:4*
5. *''किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हम एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएं। तब परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।'' फिलिप्पियों 4:6-7*
6. *''इसलिये हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य है, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो। फिलिप्पियों 4:8*
7. *''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता है।'' फिलिप्पियों 4:13*

संक्षिप्त सारांश

1. फिलिप्पियों को ''दु:ख में से सामर्थ'' यह शीर्षक दिया जा सकता है। यह पुस्तक मसीह से भरे जाने, उसके हमारे मनों में भरे जाने, उसे अपना लक्ष्य बनाने, अपना बल बनाने और दु:ख में भी उसमें आनन्दित रहने के बारे में है।
2. पौलुस नीरो का बन्दी था, तौभी इस पत्री में ''आनन्द'' और ''आनन्दित'' शब्दों की विजयी ध्वनि सुनाई देती है क्योंकि ये शब्द उसमें बार बार आते हैं।
3. परिपक्व मसीही जीवन यह है कि हमारी परिस्थितियों के बावजूद, हम में जीवित मसीह के जीवन, स्वभाव और मन काम निरंतर बढ़ते जाना। फिलिप्पियों 1:6,11; 2:5,13
4. फिलिप्पियों 2:5-11 में शिखर तक पहुंचता है जब वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के अपमान और उन्नत किये जाने के संबंध में एक महिमामयी और गहन घोषणा करता है।
5. फिलिप्पियों को निम्नलिखित में भागों में बांटा जा सकता है:
   क. परिचय 1:1-7
   ख. मसीह मसीही का जीवन है: दु:ख के बावजूद आनन्दित होना 1:8-30

ग. मसीह मसीही का नमूना है: निम्न सेवा में आनन्दित होना 2:1-30

घ. मसीह मसीही विश्वास का उद्देश्य, अभिलाषा और अपेक्षा है: 3:1-21

ड़. मसीह, मसीही की शक्ति है: चिन्ता में आनन्दित होना, 4:1-9

च. समापन, 4:10-23

अध्याय 20

फिलिप्पियों – भाग दो

अनुग्रह बनाम कार्य:

1. अपने बहुत से पत्रों के समान पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के विश्वासियों को भी कर्मकाण्डवाद के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति के लिए सावधान किया है, जो निरन्तर सामने आ रही थी।
2. यहूदी पुराने नियम की व्यवस्था से इतना अधिक बंधे हुए थे कि वे बार-बार कार्यों के द्वारा उद्धार पाने की धारणा की ओर जाने का प्रयास करते रहते थे।
3. परन्तु पौलुस ने पुन: दोहराया कि उद्धार मात्र मसीह में और मात्र विश्वास से है।

तारों के समान चमकना:

1. पौलुस विश्वासियों को उसके उदाहरण पर चलने और संकट एवं सताव के मध्य भी (पौलुस बंदीगृह से लिख रहा था) ''परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी साहस'' करने के लिये प्रोत्साहित करता है। फिलिप्पियों 1:14
2. वह उन्हें इस दुष्ट संसार में ऐसा शुद्ध जीवन जीने के लिये प्रोत्साहित करता है कि वे एक गवाह के रूप में सृष्टि में तारों के समान चमकें। फिलिपिप्यों 2:15
3. पौलुस उन्हें, ''ईनाम पाने के लिये निशाने की ओर दौड़े'' जाने के संबंध में अपना उदाहरण प्रस्तुत करता है। फिलिप्पियों 3:10-14

व्यावहारिक लागूकरण:

फिलिप्पियों की पत्री पौलुस के सब से व्यक्तिगत पत्रों में से एक है, और इस कारण इसमें विश्वासियों के लिए कई व्यक्तिगत लागूकरण हैं।

1. सभी मसीहियों ने, किसी न किसी समय, मसीह के सुसमाचार के विरुद्ध अविश्वासियों की ओर से शत्रुता की भावना का अनुभव किया है।
   क. इसकी अपेक्षा की जानी चाहिये। यीशु ने कहा है कि संसार ने उससे बैर किया है वह उसके अनुयायियों से भी बैर करेगा। यूहन्ना 15:18
   ख. पौलुस हमें सताव का सामाना करने को डटे रहने के लिए प्रोत्साहित करता है कि ''एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के

विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो।'' फिलिप्पियों 1:27

2. फिलिप्पियों का अन्य लागूकरण मसीहियों का दीनता में संगठित होकर रहना है।
   क. हम मसीह में एक हैं और हमें इसी प्रकार से एक दूसरे के साथ एक होने का प्रयास करते रहने की आवश्यकता है। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि ''एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखों और'' और दूसरों की रुचि और भलाई का ध्यान रखते हुए, अभिमान और स्वार्थ को एक ओर रखते हुए, ''दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो,'' । फिलिप्पियों 2:2-4
   ख. यदि हम सभी पौलुस के परामर्श पर ध्यान दें तो आज कलीसियाओं में संघर्ष बहुत कम हो जाएगा।
3. फिलिप्पियों की अन्य लागूकरण वह आनन्द और आनन्दित रहना है जो उसके पूरे पत्र में दिखता है।
   क. पौलुस आनन्दित है कि मसीह के बारे में प्रचार किया जा रहा है। फिलिप्पियों 1:8
   ख. वह अपने सताव में आनन्द मनाता है। फिलिप्पियों 2:18
   ग. वह दूसरों को प्रभु में आनन्दित रहने के लिये प्रोत्साहित करता है। फिलिप्पियों 3:1
   घ. वह विश्वासियों के लिये इस प्रोत्साहन का सारांश देता है, ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।''
   ड़ विश्वासी होने के कारण, हम अपनी सारी चिन्ता परमेश्वर पर डालकर उसकी शांति और आनन्द का अनुभव कर सकते हैं, यदि हम हर एक बात में (हमारे) निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित करते हैं। फिलिप्पियों 4:6
   च. सताव और बंदीगृह में होने के बावजूद, पौलुस का आनन्द इस पत्री में चमकता हुआ दिखता है, और उसके द्वारा अनुभव किये जाने वाले आनन्द की प्रतिज्ञा हम से भी की गई है, जब कि हम अपने विचारों को प्रभु पर केन्द्रित रखते हैं। फिलिप्पियों 4:8

नियत कार्य: विद्यार्थियों को फिलिप्पियों में ''आनन्द'' और ''आनन्दित'' शब्दों को चिन्हांकित करने दें। फिलिप्पियों 1:4, 18, 25, 26; 2:2, 28; 3:1, 4:1, 4, 10

अध्याय 21

कुलुस्सियों

लेखक और तिथि:
कुलुस्सियों 1:1 पौलुस और तीमुथियुस को अपने लेखकों के रूप में पहचानता है। इसे संभवत: ईस्वी 58-62 के बीच लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:
इस पुस्तक का मुख्य विषय यीशु मसीह का प्रभुत्व और प्रत्येक क्षेत्र में हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने की उसकी पर्याप्तता है।

1. कुलुस्सियों की पुस्तक का पहला आधा भाग थियोलोजिकल निबंध है जिसमें मसीह का सुंदर और अगाध (गहरा) वर्णन है। (कुलुस्सियों 1:15-20)।
2. दूसरा आधा भाग एक लघु आचार-विचार-पाठ्यक्रम है जो मसीही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को बताता है। पौलुस व्यक्तिगत जीवन से घर और परिवार तक, और काम से लेकर यहां तक आगे बढ़ता है कि हमें एक दूसरे के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना है।

मुख्य पद:
1. *''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।'' कुलुस्सियों 1:15-16*
2. *''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता और सहनशीलता धारण करो और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किये, वैसे ही तुम भी करो।'' कुलुस्सियों 3:12-13*
3. *''अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो। तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए।'' कुलुस्सियों 4:5-6*

संक्षिप्त सारांशः

1. कुलुस्सियों को स्पष्टतया उस विधर्म को परास्त करने के लिये लिखा गया था जो कुलुस्से में उत्पन्न हुआ था, जिसने कलीसिया के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया था। जबकि हमें यह नहीं पता कि पौलुस को क्या बताया गया था, तथापि यह पत्र उसकी प्रतिक्रिया है।
2. पौलुस की प्रतिक्रिया के आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वह मसीह के संबंध में निर्माण हुये विकृत दृष्टिकोण को संबोधित कर रहा था। पौलुस यहूदियों के खतना और अन्य परंपराओं पर भी वाद-विवाद करता दिखाई देता है (कुलु. 8:11; 3:11)। मसीह की पर्याप्तता की ओर हमारा ध्यान लगाने में वह एक अद्वितीय कार्य करता है।
3. कुलुस्सियों की पुस्तक में, मसीह के ईश्वरत्व और झूठी धारणाओं के संबंध में सैद्धांतिक निर्देशों के साथ-साथ (1:15; 2:23) मसीही चाल-चलन, जिसमें मित्र और बोली शामिल है, के संबंध में व्यावहारिक शिक्षा भी मिलती है (3:1-4:18)।

व्यावहारिक लागूकरणः

कुलुस्सियों आज हमें हमारे जीवनों में, हमारे उद्धार और हमारे शुद्धिकरण दोनों ही के लिये, मसीह की पूर्ण और संपूर्ण पर्याप्तता के बारे में सिखाती है।

1. ऐसे किसी भी भटकावे से हमें सतर्क रहना है जो मसीह यीशु की प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप जो केन्द्रियता है उसे कम करते हैं, जिसमें कर्मकाण्ड तथा झूठी शिक्षाएं भी आते हैं।
2. कोई भी ''धर्म'' जो स्वयं को सत्य की बराबरी में लाने के लिये, बाइबल के समान अधिकार रखने का दावा करने वाली पुस्तकों का उपयोग करता है, या जो उद्धार के लिए परमेश्वर के द्वारा हमारे लिये पूर्ण किये गये कार्य में मानवी प्रयास की आवश्यकता को जोड़ता है, उससे बचना चाहिए।
3. मसीह हमें सुनिश्चित मापदण्ड देता है। पाप से कोई भी समझौता नहीं है।
4. मसीहियत एक धर्म या जीवन के ढ़ंग से बढ़कर है; यह परमेश्वर के साथ का संबंध है।
5. भले काम, ज्योतिष शास्त्र, जादू-टोना और जन्म-कुंडलियां हमें परमेश्वर का मार्ग नहीं दिखाते। मात्र मसीह दिखाता है।
6. हमारे लिये उसकी इच्छा प्रगट हुई है उसके वचन में, जो हमारे लिये उसके प्रेम का पत्र है; हमें इसे जानना अवश्य है!

अध्याय 22

1 थिस्सलुनीकियों

लेखक और लिखने की तिथि:
पौलुस के साथ तीमुथियुस और सीलास इसके लेखक हैं। पहला थिस्सलुनीकियों ईस्वी 50 के लगभग लिखा गया है। 1 थिस्स. 1:1

लिखने का उद्देश्य:
पौलुस ने यह पत्र, थिस्सलुनीके की कलीसिया में मसीह के दूबारा आने के बारे में फैली कुछ गलतफहमियों को दूर करने के लिए लिखा था।

मुख्य पद:

1. *''इसलिए हे भाइयो, हमने अपने सारे दु:ख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई।'' 1 थिस्सलुनीकियों 3:7*
2. *''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी; जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।'' 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17*
3. *''सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।'' 1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18*

संक्षिप्त सारांश:

1. प्रथम तीन अध्याय पौलुस की थिस्सलुनीके की कलीसिया में जाने की लालसा रखने के बारे में हैं, जो कि शैतान के उसे रोकने के कारण वह उसे पूरा नहीं कर पाया था (1थिस्सलुनीकियों 2:18), और यह कि पौलुस कैसे उनकी चिंता करता था और उनका समाचार सुनकर कैसे प्रोत्साहित होता था।
2. पौलुस उनके लिए एक प्रार्थना के साथ इस भाग का समापन करता है, कि उनका प्रेम बढ़े, उनका हृदय दृढ़ हो ताकि वे ''हमारे परमेश्वर और पिता के

सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।'' 1थिस्स. 3:11-13

3. अध्याय 4 में पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों को इस बारे में निर्देश देता है कि मसीह यीशु में पवित्र जीवन कैसे जीयें। 1 थिस्स. 4:1-12
4. पौलुस आगे उन्हें, मसीह के लौटने के बारे में और जो पहले ही मसीह में मर चुके हैं उनसे संबंधित गलत धारणाओं पर निर्देश देता है। वह उन्हें बताता है कि जो लोग मसीह यीशु में मरे हैं वे उसके लौटने पर स्वर्ग जाएंगे। 1थिस्स. 4:13-18, 5:1-11
5. पुस्तक का अन्त मसीही जीवन जीने के अन्तिम निर्देशों के साथ होता है।

सताव का सामना:

1. पौलुस थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराता है कि जो सताव उन पर आया था वह पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और यीशु के दु:ख उठाने के समान ही था। 1 थिस्स. 2:14-16
2. पौलुस उन्हें उस सताव के मध्य भी जो वे निस्सदेह सह रहे थे, अपने विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिये प्रोत्साहित करता है, ऐसे ही सताव का अनुभव पौलुस भी प्रतिदिन कर रहा था। 1थिस्स. 3:4 व 7
3. यीशु ने चिताया था कि परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं का सदा अधर्मियों के द्वारा विरोध किया जाएग। लूका 11:49

व्यावहारिक लागूकरण:

इस पुस्तक को जीवन की अनेक परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है।

1. यह हमें आत्मविश्वास देती है कि मसीह के लौटने पर हम मसीही, मृतक और जीवित, दोनों ही उसके साथ होंगे। 1 थिस्स. 4:13-18
2. यह हमें आश्वासन देती है कि मसीही होने के कारण हम पर परमेश्वर का क्रोध नहीं होगा 1थिस्स. 5:8-9
3. यह हमें निर्देश देती है कि हम प्रतिदिन का मसीही जीवन कैसे चलें। 1थिस्स. 4-5

अध्याय 23

2 थिस्सलुनीकियों

लेखक और लिखने की तिथि:
1 थिस्सलुनीकियों के समान ही, 2 थिस्सलुनीकियों को भी पौलुस के साथ सीलास और तीमथियुस ने लिखा था। इसे संभवत: ईस्वी 51-52 में लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:
1. थिस्सलुनीके की कलीसिया में अभी भी मसीह के दूसरे आगमन के बारे में कुछ गलत धारणाएं थीं। उनका मानना था कि ऐसा हो चुका है इसलिए उन्होंने काम करना छोड़ दिया था।
2. वे बुरी तरह से सताये जा रहे थे। गलत धाराणाओं को हटाने और उन्हें शांति देने के लिये पौलुस ने इसे लिखा।

मुख्य पद:
1. *''क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। 2 थिस्स. 1:6-7*
2. *''हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगों, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ।'' 2 थिस्स. 2:13*
3. *''परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा। 2 थिस्स. 3:3*

संक्षिप्त सारांश:
1. पौलुस थिस्सलुनीके की कलीसिया का अभिवादन करता है, उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करता है।
2. वह सताव के समय में उनकी दृढ़ता और विश्वास के लिए उनकी प्रशंसा

करता है (2 थिस्स 1:3-4) और 11 व 12 पदों में उनके लिए प्रार्थना करता है।

3. अध्याय 2 में पौलुस स्पष्ट करता है कि प्रभु के दिन में क्या होगा (जब पृथ्वी पर मसीह का लौटना होगा)। 2 थिस्स. 2:1-12
4. तब पौलुस उन्हें स्थिर बने रहने के लिये प्रोत्साहित करता है। 2 थिस्स. 2:13-15
5. वह उन्हें भला काम करने वाले बनने का और ऐसे व्यक्तियों से दूर रहने का निर्देश देता है जो सुमसाचार के अनुसार नहीं जीते। 2 थिस्स. 3:6-13

व्यावहारिक लागूकरण:

1. 2 थिस्सलुनीकियों की पुस्तक में अन्तिम समयों के बारे में बहुत सी आवश्यक जानकारी है।
2. यह हमें आलसी न होने का और जो हमारे पास है उसके लिये कार्य करने का प्रोत्साहन देती है।
3. थिस्सलुनीकियों में हम विश्वासियों के लिए बहुत सी प्रार्थनाओं को पढ़ते हैं। ये प्रार्थनाएं हमारे लिये इसका एक उदाहरण हो सकती हैं कि आज हम अपने और दूसरे विश्वासियों के लिए कैसे प्रार्थना करें।
   क. कि परमेश्वर उन्हें अपनी बुलाहट के योग्य समझे और यह कि अपनी सामर्थ से वह उनके प्रत्येक भले उद्देश्य को और उनके विश्वास से प्रेरित प्रत्येक कार्य को पूरा करे। 2 थिस्स. 1:11-12
   ख. कि परमेश्वर उनके मनों को साहस दे और हर एक अच्छे काम और वचन में उन्हें दृढ़ करे। 2थिस्स. 2:16-17
   ग. कि परमेश्वर के प्रेम और स्थिरता में बढ़ने के लिये प्रभु उनके मनों की अगुवाई करे। 2थिस्स. 3:5
   घ. कि प्रभु आप ही उनके साथ हो और उन्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे और कि उसका अनुग्रह उनके साथ रहे। 2थिस्स. 3:16, 18
4. हम लेखक (लेखकों) को विश्वासियों को यह प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए भी देखते हैं कि प्रभु का वचन शीघ्र फैले और महिमा पाए, और यह कि वे दुष्ट और बुरे मनुष्यों से बचे रहें। 2थिस्स. 3:1-2
5. हमें भी इसी प्रकार प्रार्थना करना है कि परमेश्वर के शुभ समाचार का संदेश शीघ्रता से फैले और कि परमेश्वर को बड़ा आदर मिले, जिसके योग्य वह है।

अध्याय 24

1 तीमुथियुस

लेखक और लिखने की तिथि:

1 तीमुथियुस की पुस्तक पौलुस ने ईस्वी 62-66 में लिखी थी।

लिखने का उद्देश्य:

पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसी नगर की कलीसिया का और संभवत: अन्य कलीसियाओं का प्रबंध देखने के उसके कार्य में उसे प्रोत्साहित करने के लिये यह पत्र लिखा था। 1तीमु. 1:3

मुख्य पद:

1. *''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।'' 1तीमु. 2:5*
2. *''यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि सत्कार करने वाला, और सिखाने में निपुण हो।' पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगडालू और न लोभी हो।' 1 तीमु. 3:1-3*
3. *''विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिये तू बुलाया गया और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।'' 1 तीमु. 6:12*

संक्षिप्त सारांश:

1. यह तीमुथियुस को लिखा गया पौलुस का पहला पत्र है, जो एक युवा पास्टर था और पौलुस के काम में उसका सहायक रहा था। पौलुस तीमुथियुस के लिए शिक्षक और सलाहकार से बढ़कर था, वह उस के लिये पिता के समान था, और तीमुथियुस पौलुस के लिये पुत्र के समान था। 1 तीमु. 1:2
2. पत्र का आरंभ पौलुस तीमुथियुस को झूठे शिक्षकों और झूठे सिद्धान्तों से सतर्क रहने का आग्रह करते हुए करता है। तथापि अधिकांश पत्र पास्तरीय चाल-चलन से संबंधित है।

3. पौलुस तीमुथियुस को आराधना के संबंध में (अध्याय 2) और कलीसिया के लिये परिपक्व अगुवों को विकसित करने के संबंध में निर्देश देता है (अध्याय 3)।
4. अधिकांशतः यह पत्र, पास्तरीय चाल-चलन और झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देने और अविवाहितों, विधवाओं, प्राचीनों और दासों के प्रति कलीसिया के उत्तरदायित्व के बारे में है।
5. पूरे पत्र में पौलुस तीमुथियुस को स्थिर और दृढ़ रहने और अपनी बुलाहट के प्रति सच्चा बने रहने के लिये प्रोत्साहित करता है।
6. यह पत्र प्राचीनों को नियुक्त करने के संबंध में नींव डालता (1 तीमु. 3:1-7), और कलीसिया के कामों में लोगों को नियुक्त करने के लिए मार्गदर्शन देता है (1 तीमु. 3:8-13)।

व्यावहारिक लागूकरणः

1. पौलुस ने बताया है कि यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ और उसमें विश्वास रखने वालों के लिए उद्धारकर्त्ता है (1 तीमु. 2:5)। वह कलीसिया का प्रभु है, और उसकी कलीसिया की सेवा और अगुवाई करने के द्वारा तीमुथियुस उसकी सेवा करता है।
2. पौलुस तीमुथियुस को कलीसिया के सिद्धान्तों, कलीसिया की अगुवाई, और कलीसिया के प्रबंधन के मामलों में निर्देश देता है। आज हम अपनी स्थानीय सभा का संचालन करने में इन्हीं निर्देशों का उपयोग कर सकते हैं।
3. इसी प्रकार से, एक पास्टर का कार्य और सेवकाई, एक प्राचीन की योग्यताएं, और सेवक (डीकन) की योग्यताएं आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण और उपयुक्त हैं जितनी तीमुथियुस के दिनों में थीं।
4. तीमुथियुस को लिखा पौलुस का पहला पत्र स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करने, प्रबंध करने और पास्तरीय कार्य करने के संबंध में एक निर्देश–पुस्तिका है। इस पत्र के निर्देश मसीह की कलीसिया के किसी भी अगुवे पर, या जो अगुवा बनना चाहता है उस पर, लागू होते हैं, और आज भी वैसे ही समान उपयुक्त हैं जैसे पौलुस के दिनों में थे।
5. जिन लोगों को उनकी कलीसिया में अगुवे की भूमिका में नहीं बुलाया गया उनके लिये भी यह पुस्तक व्यावहारिक है। प्रत्येक अनुयायी को विश्वास के लिए संघर्ष करना और झूठी शिक्षा से बचना अवश्य है। अवश्य है कि प्रत्येक अनुयायी स्थिर और दृढ़ बना रहे।

अध्याय 25

2 तीमुथियुस

लेखक और लिखने की तिथि:
2 तीमुथियुस 1:1 प्रेरित पौलुस को इस पत्री का लेखक बताता है। इसे पौलुस की मृत्यु से कुछ ही पहले, ईस्वी 67 के लगभग लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. रोम में पुन: बंदी बनाए जाने पर, प्रेरित पौलुस को अकेलेपन और छोड़ दिये जाने का आभास होने लगा था। पौलुस यह जान गया था कि उसके सांसारिक जीवन का अन्त जल्द ही होनेवाला था। 2 तीमुथियुस की पुस्तक निश्चय ही पौलुस के ''अन्तिम शब्द'' हैं।
2. पौलुस ने कलीसियाओं के प्रति, और विशेष रूप से तीमुथियुस के प्रति, अपनी चिन्ता व्यक्त करने के लिये अपनी स्वयं की पुरानी परिस्थितियों की ओर देखा। पौलुस अपने अन्तिम शब्दों का उपयोग तीमुथियुस को, और अन्य सभी विश्वासियों को, विश्वास में दृढ़ रहने (2 तीमुथियुस 3:14) और यीशु मसीह के सुसमाचार की घोषण करने में प्रोत्साहन देने के लिये करना चाहता था (2 तीमुथियुस 4:2)।

मुख्य पद:

1. *''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।'' 2तीमु. 1:7*
2. *''और जो बातें तू ने बहुत गावाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।'' 2 तीमु. 2:2*
3. *''संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' 2 तीमु. 3:16-17*
4. *''तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा।'' 2 तीमु.*

4:2

5. *''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं। 2 तीमु. 4:7-8*

संक्षिप्त सारांशः

1. पौलुस तीमुथियुस को मसीह के लिए उत्साही और सही शिक्षा में स्थिर बने रहने के लिये प्रोत्साहित करता है। 2 तीमु.1:1-2, 13-14
2. वह तीमुथियुस को अभक्ति की मान्यताओं और परिपाटियों से बचने और किसी भी अनैतिक कार्य से भागने का स्मरण दिलाता है। 2 तीम. 2:14-26
3. वह तीमुथियुस को चेतावनी देता है कि अन्तिम दिनों में अत्यंत सताव और मसीही विश्वास से स्वधर्म त्याग होगा। 2 तीमु. 3:1-17
4. पौलुस विश्वासियों से विश्वास में दृढ़ खड़े रहने और प्रबलता से दौड़ को समाप्त करने के भावुक निवेदन के साथ समापन करता है। 2 तीमु. 4:1-8

व्यावहारिक लागूकरणः

1. मसीही सेवकाई के संबंध में संपूर्ण पवित्रशास्त्र में सब से कूटनीतिक और महान पद 2 तीमुथियुस 2:2 में मिलता है– कि हमें दूसरों को सिखाना है जो फिर दूसरों को सिखायेंगे। हमारी सेवकाइयों में हमें परमेश्वर से मांगना चाहिये कि वह हमें उन लोगों की अगुवाई करने का अवसर देगा जो बाद में दूसरों को सिखानेवाले होंगे। इस तरह से हमारी सेवकाई का फल विस्तृत होते हुए, एक पीढ़ी से बहुत पीढ़ियों तक पहुंचने वाला हो सकता है।
2. मसीही जीवन में सही रास्ते से भटक जाना बहुत सरल है। हमें अपनी आंखें ईनाम पर–स्वर्ग में यीशु मसीह से पुरस्कार पाने पर-रखनी है। 2 तीमु. 4:8
3. अवश्य है कि हम झूठे सिद्धान्त और विधर्मी रीतियों से बचने का प्रयास करें।
4. यह मात्र तभी हो सकता है जब हम स्वयं परमेश्वर के वचन के ज्ञान में जड़ पकड़े हुये हों और हर उस शिक्षा को जो बाइबल के अनुसार नहीं है अस्वीकार करने में दृढ़ हों।

अध्याय 26

तीतुस

लेखक और तिथि:
पौलुस ने ईस्वी 66 के लगभग, तीतुस के लिए इस पत्री को लिखा था।

लिखने का उद्देश्य:

1. पौलुस ने तीतुस को, जो विश्वास में उसका भाई था उसे, क्रेते में उस कलीसिया की अगुवाई करने के लिये छोड़ा था जिसकी स्थापना पौलुस ने अपनी किसी एक मिशनरी यात्रा के दौरान की थी। तीतुस 1:5
2. यह पत्र तीतुस को इस बारे में सलाह देता है कि कलीसिया के लिए ठहराये जाने वाले अगुवों में किन गुणों को देखने की आवश्यकता है। वह तीतुस को क्रेते द्वीप पर रहने वाले लोगों के व्यवहार से सावधान रहने के लिये भी कहता है। तीतुस 1:12

मुख्य पद:

1. *''मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष बातों को सुधारे और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।'' तीतुस 1:5*
2. *''पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह। कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए।'' तीतुस 2:15*
3. *''पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रगट हुआ, तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।'' तीतुस 3:4-5*

संक्षिप्त सारांश:

1. तीतुस की पत्री तीन पास्तरीय पत्रियों में से, 1 और 2 तीमुथियुस के साथ, एक गिनी जाती है।
2. पौलुस ने तीतुस को पूरे क्रेते द्वीप पर सभी गृह-कलीसियाओं में प्राचीनों को नियुक्त करने का कार्य सौंपा था और अब वह इन प्राचीनों के लिए आवश्यक गुणों के बारे में निर्देश लिख रहा था। तीतुस 1:5-9

3. प्रेरित पौलुस ने तीतुस को जैसे अगुवों की खोज करने के लिये कहा था, वैसे ही पौलुस यह भी बताता है कि तीतुस को अगुवों को कैसे निर्देश देना है जिससे वे, मात्र वे ही नहीं परंतु सभी युगों में नियुक्त किये जाने वाले अगुवे, स्त्री और पुरुष दोनों, मसीह में अपने विश्वास में बढ़ सकेंगे। तीतुस 2:1-8
4. पौलुस, तीतुस की मसीह के विश्वास में बने रहने में सहायता करने के लिये, उसे नीकुपुलिस शहर आने, और अपने साथ कलीसिया के दो अन्य सदस्यों को भी लाने, का परामर्श देता है। तीतुस 3:12-13

व्यावहारिक लागूकरण:

1. पौलुस इस बारे में धर्मी निर्देश देता है कि हम अपने प्रभु को प्रसन्न करने योग्य जीवन कैसे जीयें, और साथ ही किन बातों से बचें।
   क. पौलुस कहता है कि जबकि हम शुद्ध बने रहने का प्रयास करते हैं, हमें उन बातों से बचना चाहिये जो हमारे मनों और विवेकों को अशुद्ध करती हैं।
   ख. और तब पौलुस उस कथन को कहता है जिसे कभी भी भुलाया जाना नहीं चाहिए, ''वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं, पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं; क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न मानने वाले हैं, और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं।'' तीतुस 1:16
2. इस चेतावनी के साथ पौलुस हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर का इन्कार करने से कैसे बचें: ''उसने हमारा उद्धार किया... अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला।'' तीतुस 3:5ब-6
3. पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे मनों को प्रतिदिन नया बनाये जाने की इच्छा रखते हुये हम ऐसे मसीहियों के रूप में बढ़ सकते हैं जो अपने जीने के ढंग से परमेश्वर को आदर देते हैं।

अध्याय 27

फिलेमोन

लेखक और तिथि:
पौलुस ने, ईस्वी 60 के लगभग, फिलेमोन के लिए यह पत्र लिखा था। इसे लिखने के समय में पौलुस बंदीगृह में था।

लिखने का उद्देश्य:

1. फिलेमोन को लिखा गया यह पत्र, पौलुस के लेखों में सबसे छोटा है, और दास प्रथा से संबंधित विषय है। फिलेमोन एक दास का स्वामी था और उसके घर में कलीसिया सभा होती थी।
2. पौलुस की इफिसुस में सेवकाई समय में, संभवत: फिलेमोन उस नगर में गया था, उसने पौलुस के प्रचार को सुना और मसीही बन गया था।
3. दास उनेसिमुस, अपने स्वामी फिलेमोन के पास से चोरी करके रोम को भाग गया था, और वहां वह पौलुस से मिला। उनेसिमुस अभी भी फिलेमोन की सम्पत्ति था, और पौलुस ने अपने स्वामी के पास लौटने के उसके मार्ग को सुगम बनाने के लिए इस पत्र को लिखा।
4. उनेसिमुस एक विश्वासी बन चुका था (फिलेमोन 10) और पौलुस चाहता था कि फिलेमोन अब उनेसिमुस को मसीह में अपने भाई के रूप में, न कि मात्र एक दास के रूप में, ग्रहण करे।

मुख्य पद:

1. *''मैं प्रार्थना करता हूं कि विश्वास में तेरा सहभागी होना, तुम्हारी सारी भलाई की पहचान में, मसीह के लिए प्रभावशाली हो।'' पद 6*
2. *''अब से दास की तरह नहीं वरन् दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे, जो मेरा तो विशेष प्रिय है ही, पर अब शरीर में और प्रभु में भी, तेरा भी विशेष प्रिय हो।'' पद 16*
3. *''यदि उसने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।'' पद 18*

संक्षिप्त सारांशः

1. पौलुस ने दासों के स्वामियों को चेतावनी दी थी कि उनका अपने दासों के प्रति उत्तरदायित्व है, और दासों को भी ऐसे व्यक्ति होने कहा था जिन्हें नैतिक रूप से उत्तरदायी रहते हुये परमेश्वर का भय मानना था।
2. फिलेमोन की पत्री में, पौलुस दास प्रथा का खण्डन नहीं करता, परन्तु वह उनेसिमुस को एक दास के बजाय भाई के रूप में प्रस्तुत करता है। जब एक स्वामी अपने दास को भाई का स्थान देता है तो वह दास ऐसी स्थिति में पहुंच जाता है जिसमें दास का कानूनी शीर्षक निरर्थक हो जाता है।
3. यद्यपि प्रारम्भिक कलीसिया ने दास-प्रथा पर प्रत्यक्ष प्रहार नहीं किया था, इसने स्वामी और दास के बीच एक नये संबंध की नींव को डाला था।
4. सुसमाचार की ज्योति तक पहुंचने के बाद ही दास प्रथा समाप्त हो सकती है।

कार्यकारी अनुग्रहः

1. रोमी कानून और पुराने नियम की व्यवस्था दोनों फिलेमोन को एक भगोड़े दास को दण्ड देने का अधिकार दिया था।
2. परन्तु प्रभु यीशु के अनुग्रह ने फिलेमोन को बाध्य किया था कि वह अपने दास को क्षमा करे और मसीह की देह में समानता के आधार पर उसके साथ प्रेम की सहभागिता में रहे।

व्यावहारिक लागूकरणः

1. नौकर रखने वाले मालिक, राजनैतिक अगुवे, निगम प्रबंधक और माता-पिता सभी पौलुस की शिक्षा का अनुकरण कर सकते हैं यदि वे अपने मसीही कर्मचारियों, सहकर्मियों और परिवार के सदस्यों के साथ मसीह की देह के अंगों के समान व्यवहार करते हैं।
2. आधुनिक समाज में मसीहियों को, अपने अधीनस्थ काम करने वालों को पैर रखने के पत्थरों के रूप में नहीं देखना चाहिये कि अपनी महत्वाकांक्षाओं की प्राप्ति के लिए उनका उपयोग करें, परन्तु ऐसे जनों के रूप में देखना चाहिये जिनसे परमेश्वर प्रेम रखता है और जिनके साथ अनुग्रहपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।
3. इसके अतिरिक्त, सभी मसीही अगुवों को यह समझ लेना अवश्य है कि परमेश्वर उन्हें उनके प्रति उत्तरदायी ठहराता है जो उनके लिए कार्य करते हैं, चाहे उनके सहायक मसीही हों या नहीं। प्रत्येक को अपने कामों के लिए परमेश्वर को जवाब देना है। कुलुस्सियों 4:1

अध्याय 28

इब्रानियों

लेखक और लिखने की तिथि:

1. यद्यपि बहुतों का मानना है कि इब्रानियों को पौलुस ने लिखा, परन्तु हम इस बात में निश्चित नहीं हो सकते। कलम से लिखने वाला चाहे जो कोई रहा हो, संपूर्ण पवित्रशास्त्र का लेखक पवित्र आत्मा ही है।
2. कुछ अन्य छोटे-छोटे सूत्रों के साथ यह तथ्य कि इस पत्री के लिखे जाने के समय तीमुथियुस जीवित था, इससे अनुमान लगाया जाता है कि इसे ईस्वी 65 के लगभग लिखा गया होगा।

लिखने का उद्देश्य:

यह पत्र, सताव सहने वाले विश्वासियों के लिए, यीशु मसीह के अनुग्रह में बने रहने की शिक्षा है।

मुख्य पद:

1. *''पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।'' इब्रानियों 1:1-2*
2. *''क्योंकि हमारा ऐसा महायानक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।'' इब्रा. 4:15-16*
3. *''इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बाद हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें। इब्रा. 12:1*

संक्षिप्त सारांश:

1. इब्रानियों की पुस्तक तीन भिन्न समूहों से बात करती है: (1) मसीह में

विश्वासी, (2) गैर विश्वासी जिनमें मसीह के तथ्यों का ज्ञान और बौद्धिक स्वीकृति पाई जाती थी, और (3) गैर विश्वासी, जो मसीह की ओर पहले आकर्षित हुए थे, परन्तु बाद में उसे ठुकरा दिया था। इब्रानियों को पढ़ते समय, यह समझना महत्वपूर्ण है कि किस संदर्भ में किस समूह को संबोधित किया जा रहा है। ऐसा न कर पाना हमें ऐसे निष्कषों पर ले जा सकता है जो शेष पवित्रशास्त्र के विरुद्ध हो सकते हैं।

2. पुराना नियम के लेखों में यहूदीवाद के धार्मिक संस्कार आने वाली बातों के छाया मात्र थे।
   क. इब्रानियों हमें बताता है कि मात्र धर्म द्वारा दी जानेवाली किसी भी बात की तुलना में मसीह श्रेष्ठ है।
   ख. धर्म के सारे साज़-समान मसीह यीशु के व्यक्तित्व, कार्य, सेवकाई की तुलना में फीके हैं।
3. अत:, अर्थपूर्ण ढंग से लिखे गए इस पत्र का मुख्य विषय हमारे प्रभु यीशु की सर्वोच्चता ही ठहरता है।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. इब्रानियों हमें ''विश्वास के नायकों'' के प्रोत्साहित करने वाले उदाहरणों को देता है, जो बड़ी कठिनाइयों ओर बुरी परिस्थितियों के बावजूद दृढ़ रहे थे (इब्रानियों 11)। उनके समान, हम भी अपनी परिस्थितियों के बावजूद परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर पूर्ण भरोसा बनाए रख सकते हैं।
2. इब्रानियों का लेखक हमें पांच गंभीर चेतावनियां देता है। वे इस प्रकार हैं:
   क. उपेक्षा करने का खतरा, इब्रा. 2:1-4
   ख. अविश्वास का खतरा, इब्रा. 3:7-4:13
   ग. आत्मिक अपरिपक्वता का खतरा, इब्रा. 5:11-6:20
   घ. सहन न कर पाने का खतरा, इब्रा. 10:26-39
   ड़. और परमेश्वर का इन्कार करने का स्वाभाविक खतरा। इब्रा. 12:25-29
3. इब्रानियों में हम प्रभु यीशु मसीह के भव्य ढंग से प्रस्तुत किये गये चित्रण को पाते हैं - जो हमारे उद्धार का महान कर्ता और सिद्ध करने वाला है। इब्रा. 12:2

अध्याय 29

याकूब

लेखक और लिखने की तिथि:

1. लेखक याकूब है, जिसे यीशु का भाई माना जाता है (मरकुस 6:3), जो यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा बना था (गलातियों 2:9)।
2. याकूब नया नियम की संभवत: सब से पुरानी पुस्तक है, जिसे कदाचित ईस्वी 45 आरंभ में लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. याकूब की पुस्तक उन यहूदी मसीहियों को निर्देशित है जो सब देशों में बिखरे हुये थे। याकूब 1:1
2. जबकि पौलुस की शिक्षाएं, विश्वास के द्वारा हमारे परमेश्वर के साथ धर्मी ठहराए जाने पर केन्द्रित है,
   याकूब की शिक्षाएं उस जीवन और कार्यों पर विचार करती हैं जो उस धर्मी ठहराये गये होने का उदाहरण देते हैं।
3. याकूब इस पर बल देता है कि जो लोग आत्मा से भरे हुए होंगे, उन में से भले काम स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होंगे। याकूब 2:17-18

मुख्य पद:

1. ''हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकार कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। याकूब 1:2-3
2. ''वैसे ही विश्वास भी यदि कर्म साहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। वरन् कोई कह सकता है, "तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाउंगा।"'' याकूब 2:17-18
3. ''वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और वह बड़ी-बड़ी डींगे मारती है। देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है।'' याकूब 3:5
4. ''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।'' याकूब 5:6ब

संक्षिप्ति सारांश:

1. याकूब की पुस्तक में, यीशु के पहाड़ी उपदेश की विलक्षण समानता पाई जाती है।

2. याकूब अध्याय 1 में विश्वास समस्त विशेषताओं का वर्णन करने से आरंभ करता है।
3. अध्याय 2 में और अध्याय 3 के आरंभ में वह सामाजिक न्याय और कर्म सहित विश्वास पर चर्चा करता है।
4. इसके पश्चात् वह सांसारिक और ईश्वरीय बुद्धि के बीच के अन्तर की तुलना करता है और हमें बुराई से दूर जाने तथा परमेश्वर के निकट आने के लिये कहता है।
5. याकूब विशिष्ट रूप से धन संचय करनेवाले धनवानों को, और जो स्वयं पर निर्भर रहते हैं उन्हें, गंभीर रूप से डाटता है।
6. अंत में वह विश्वासियों को दु:ख में धीरजवन्त रहने, एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने और देखभाल करने, और सहभागिता के द्वारा अपने विश्वास को बढ़ाने के प्रोत्साहन देने के साथ समापन करता है।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. याकूब की पुस्तक में हम यीशु मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों के लिए ''बोलने वाले'' ही नहीं परन्तु ''चलनेवाले'' बनने की चुनौती को देखते हैं। याकूब 2:26
   क. जबकि यह सही है कि हममें विश्वास होना आवश्यक है, याकूब यह प्रश्न करता है कि यदि हमारे कार्यों में उस विश्वास का प्रमाण नहीं मिलता तो क्या तब भी हम में विश्वास है? याकूब 2:15-18
   ख. याकूब पहाड़ी उपदेश में यीशु के शब्दों की सच्चाइयों पर ध्यान केंद्रित करता है और हमें उस उन बातों पर कार्य करने के लिये प्रेरित करता है जो यीशु ने सिखाई हैं।
2. यह पत्री इस विचार को समाप्त कर देती है कि कोई व्यक्ति मसीही होकर भी, धार्मिकता के फल लाये बिना, पाप में जीना चालू रख सकता है।
   क. याकूब कहता है कि इस तरह का विश्वास तो दुष्टात्माओं में भी होता है जो ''विश्वास करती और कांपती'' हैं। याकूब 2:19
   ख. तथापि ऐसा ''विश्वास'' उद्धार नहीं कर सकता, क्योंकि यह उन कामों से प्रामाणित नहीं ठहरता है जो सदा उद्धार करने वाले विश्वास के साथ होते ही हैं।
   ग. भले काम उद्धार का कारण नहीं है; परन्तु वे उद्धार का परिणाम जरूर हैं।

अध्याय 30

1 पतरस

लेखक और लिखने की तिथि:

1 पतरस 1:1, पतरस की पहली पत्री का लेखक प्रेरित परतस को बताता है। इसे ईस्वी 60 और 65 के लगभग लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. 1 पतरस उन विश्वासियों के लिए पतरस की ओर से लिखा गया पत्र है जो संसार भर में बिखरे हुए थे ओर अत्यंत सताव में थे।
   क. यदि कोई सताव को समझता था तो वह पतरस था। वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण बार-बार पीटा गया और जेल में डाला गया था।
   ख. तथापि, उसने बिना किसी कड़वाहट के और आशा को खोए बिना, इस सब को सहा और एक आज्ञाकारी विजयी जीवन जीया।
2. पतरस ने विश्वासियों को, यीशु के दु:ख उठाकर भी विश्वासयोग्य रहने के उदाहरण का अनुकरण करते हुये, यीशु में आशा रखने के लिये प्रोत्साहित किया।

मुख्य पद:

1. ''पर तुम एक चुना हुआ वंश और राज-पदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करा। 1 पतरस 2:9
2. ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।'' 1 पतरस 2:24
3. ''सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही

दु:ख सह रहे हैं। 1 पतरस 5:8-9

संक्षिप्त सारांश:

1. पतरस लैव्यव्यवस्था 11:44 का उद्धरण देता है (''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ'') परन्तु इसका आरंभ वह सर्वप्रथम यह बताते हुए करता है कि पवित्रता को व्यवस्था का पालन करने के द्वारा नहीं पाया जाता, परन्तु मसीह के उस अनुग्रह के द्वारा जो उस पर विश्वास रखने वाले सभों को दिया जाता है। 1पतरस 1:13-15
2. अत्यंत सताव में रहने के समय में, पतरस प्रगट करता है कि यह वास्तव में आनन्द करने का समय होता है। वह कहता है कि मसीह के लिए दु:ख उठाने को एक विशेषाधिकार के रूप में देखो, क्योंकि जैसेकि उनके उद्धारकर्त्ता ने उनके लिए दु:ख उठाया था। 1पतरस 2:13-17
3. पतरस विश्वासियों को एक दूसरे के साथ मेल से रहने और एक दूसरे से अथाह प्रेम करने के लिये बार-बार प्रोत्साहित करता है। 1पतरस 3:8; 1 पतरस 4:8
4. पतरस शैतान को प्रत्येक मसीही का सब से बड़ा शत्रु मानता है, परन्तु भविष्य में मसीह का लौटना आशा देता है। 1पतरस 5:8-9

व्यावहारिक लागूकरण:

1. मसीह के साथ पहचाने जाने का एक तरीका उसके दु:खों में भागी होना है। हमें अवश्य ही तैयार रहना है कि हम उस बात के लिये दृढ़ खड़े रहें जिसे हम जानते है और सत्य मानते हैं। जब संसार तथा शैतान हमें हमारे विश्वास के कारण सताए तो हमें आनंद करना चाहिये।
2. पतरस हमें प्रोत्साहित करता है कि ''अन्यजातियों में (हमारा) चाल-चलन अच्छा हो ताकि वे (हमारे) भले कामों को देखकर परमेश्वर की महिमा करें।'' 1 परतस 2:12
3. इसी प्रकार वह भाइयों को और हमें परामर्श देता है, ''जो कोई तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो।'' 1 पतरस 3:15
4. हमारे आस-पास के लोगों के लिए मसीह के गवाह होने के इन दो आयामों का सारांश पतरस ने 4:11 में दिया है: हमें ऐसे बोलना है जैसे मानों परमेश्वर का वचन बोल रहे हों, और परमेश्वर की शक्ति से दूसरों की सेवा करनी है, ताकि सब बातों में परमेश्वर को महिमा मिले। 1 पतरस 4:11

अध्याय 31

2 पतरस

लेखक और लिखने की तिथि:
विद्वानों का मानना है कि 2 पतरस को पतरस अपने जीवन के अन्तिम समय में लिखा था। ईस्वी 68 के आरंभ में, पतरस को रोम में सम्राट नीरो के शासन काल में शहीद किया गया था, अत: यह संभव है कि 2 पतरस 65 और 68 के बीच लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. पतरस ने सावधान किया कि झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने कलीसियाओं में घुसपैठ करना आरंभ कर दिया था।
2. उसने मसीहियों को आह्वान किया कि वे अपने विश्वास में मज़बूत हों ताकि वे उस समय फैलने वाली गलत शिक्षाओं का पता लगा सकें और उनका प्रतिरोध कर सकें।
3. उसने दृढ़तापूर्वक परमेश्वर के वचन की प्रामाणिकता और प्रभु यीशु की निश्चित वापसी पर जोर दिया।

मुख्य पद:

1. *''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन-फिराव का अवसर मिले।'' 2 पतरस 3:9*
2. *''पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' 2 पतरस 3:18*

संक्षिप्त सारांश:

1. यह जानते हुए कि उसके पास कम समय था (2 पतरस 1:13-15), और यह कि वे कलीसियाएं उसी समय खतरे का सामना कर रही थीं (2 पतरस 2:1-3), पतरस पाठकों से अपनी स्मृति को नया करने (2 पतरस 1:13) और अपनी विचारधारा को प्रेरित करने (2 पतरस 3:1-2) कहता है जिससे

वे उसकी शिक्षा को याद रख सकें। (2 पतरस 1:15)

2. वह विश्वासियों को, अपने विश्वास में विशेष मसीही विशेषताओं को जोड़ते हुए अधिक परिपक्व बनने की चुनौती देता है, जिससे यीशु मसीह के संबंध के ज्ञान में वे प्रभावी और उपयोगी बनें। 2 पतरस 1:5-9
3. पतरस चाहता था कि वे अपने विश्वास मजबूत हों ताकि उन झूठे शिक्षकों का सामना कर सकें जो कलीसियाओं में घुस आए थे और कलीसिया पर बुरा प्रभाव डाल रहे थे। 2 पतरस 3:3,10
4. पतरस ने मसीहियों को सिखाया कि यीशु का दूसरा आगमन पवित्र जीवन जीने के लिए एक प्रेरणा है। 2 पतरस 3:14
5. अन्तिम चेतावनी के पश्चात्, पौलुस ने उन्हें पुनः अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ने का प्रोत्साहन दिया। उसने अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के प्रति प्रशंसा के शब्द से समापन किया। 2 पतरस 3:18
6. इस पत्री में, ''ज्ञान'' मुख्य शब्द है; यह अपने से संबंधित शब्दों के साथ, कम से कम 13 बार प्रयुक्त हुआ है।

व्यावहारिक लागूकरणः

1. पतरस के द्वारा झूठे शिक्षकों के बारे में दी गई चेतावनी निश्चित रूप से आज हमारे समय से संबंधित है।
   क. हमें परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह से जानना और सीखना है ताकि हम उन झूठे शिक्षकों और झूठे मतों से मूर्ख न बनें जो बढ़ते हुए दिखते हैं।
   ख. यीशु के द्वारा अन्तिम दिनों के बारे में मती 24:3-31 में दी गई शिक्षा को स्मरण रखें, विशेष रूप से पद 11 को ''बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।'' मत्ती 24:11
2. 2 पतरस 1:5-11 में पतरस विश्वास में बढ़ने का एक नुस्खा देता है। जब हम इस शिक्षा को अपने जीवन में लागू करेंगे तब हम ''कभी भी ठोकर न (खाएंगे), वरन् इस रीति से (हम) हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने (पाएंगे)।'' (2 पतरस 1:10ब-11)
3. हमारे विश्वास का आधार परमेश्वर का वही वचन है, और सदा रहेगा, जिसका प्रचार पतरस ने किया था।

अध्याय 32

1 यूहन्ना

लेखक और लिखने की तिथि:

1, 2 और 3 यूहन्ना को लिखने का श्रेय प्रेरित यूहन्ना को जाता है, जिसने यूहन्ना के सुसमाचार को भी लिखा। यूहन्ना की पहली पत्री को संभवत: ईस्वी 85-95 के बीच लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:

1. 1 यूहन्ना, रहस्यवाद की शिक्षा में पाई जाने वाली गलती को संबोधित करता है। रहस्यवाद एक झूठी परन्तु प्रचलित शिक्षा थी जिसका मानना था कि पदार्थ बुरा है और आत्मा भली है। इस झूठे मत ने सिखाया था कि ज्ञान, या अध्यात्मविद्या वह समाधान था जो मनुष्य को संसारिकता से उठकर आत्मिकता में जाने के लिये सक्षम करता था।
2. रहस्यवाद ने मसीह के व्यक्तित्व के संबंध में दो झूठे सिद्धान्तों को बढ़ावा दिया था: कुछ का मानना था कि यीशु वास्तव में एक भूत था (क्योंकि वे सोचते थे कि यदि शारीरिक था तो वह बुरा होता)। दूसरों ने सिखाया था कि यीशु का दोहरा व्यक्तित्व था, कभी-कभी मनुष्य और कभी-कभी ईश्वरीय।
3. यूहन्ना ने यह पत्र कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर पाई जाने वाली गलत शिक्षा को, विशेष रूप से यीशु मसीह की पहचान के संबंध में, सही करने के लिए लिखा था।
4. यूहन्ना विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करने को उत्साहित करता है। 1यूहन्ना 3:16

मुख्य पद:

1. *''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।'' 1 यूहन्ना 1:9*
2. *''जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न उसको जाना है।'' 1यूहन्ना 3:6*
3. *''मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।'' 1यूहन्ना 5:13*

संक्षिप्त सारांशः

1. प्रारंभिक कलीसिया में झूठे आत्मिक शिक्षक एक बहुत बड़ी समस्या थे। क्योंकि तब उनका मार्गदर्शन करने के लिये संपूर्ण नया नियम नहीं था, इस कारण बहुत से विश्वासी झूठे मतों और झूठे अगुवों के शिकार बने थे।
2. इसलिये कि यूहन्ना का यह पत्र, मसीह में विश्वास से संबंधित बुनियादी बातों के बारे में था, इसने अपने पाठकों की, ''क्या हम सच्चे विश्वासी हैं?'' इस प्रश्न का जवाब देने में सहायता की थी।
   क. यूहन्ना ने उन्हें बताया कि वे अपने कामों को देखकर इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।
   ख. यदि वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं तो यह उनके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रमाण था।
   ग. परन्तु यदि वे सारा समय एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते रहते हैं या स्वार्थी हैं और एक दूसरे की परवाह नहीं करते तो वे इस धोखे में हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, वास्तव में वे परमेश्वर को नहीं जानते हैं।
3. इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें सिद्ध होना था। वास्तव में, यूहन्ना ने यह भी जाना कि विश्वास करने में अपने पापों को मान लेना और परमेश्वर से क्षमा मांगना भी आता है।

व्यावहारिक उपयोगिताः

1. 1यूहन्ना की पुस्तक प्रेम और आनन्द की पुस्तक है। यह हमारी उस सहभागिता को बताती है जो दूसरों के साथ और यीशु मसीह के साथ है। यह खुशी और आनन्द के बीच अन्तर करती है। खुशी तो अस्थायी और क्षणिक है, और सच्चा आनन्द वह है जिसके बारे में 1 यूहन्ना हमें बताता है कि उसे कैसे पाना है।
2. यदि हम यूहन्ना द्वारा लिखित शब्दों को लेकर उन्हें अपने दैनिक जीवन में व्यावहारिक बनाएं, तो सच्चा प्रेम, वचनबद्धता, सहभागिता, और आनन्द जिनकी हम लालसा करते हैं, हमारे होंगे।
3. प्रेरित यूहन्ना यीशु को भली-भांति जानता था। वह हमें बता रहा है कि हम सभी यीशु मसीह के साथ वैसे ही निकटतम और घनिष्ट संबंध को प्राप्त कर सकते हैं। हमारे पास उन व्यक्तियों की गवाही है जिनका यीशु के साथ प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत संपर्क हुआ था। सुसमाचार लेखक अपनी, एक ऐतिहासिक वास्तविकता पर ठोस रूप से आधारित, गवाही देते हैं।

अध्याय 33

2 यूहन्ना

लेखक और लिखने की तिथि:

यद्यपि वचन 1 में लेखक को मात्र ''प्राचीन'' के रूप में जाना गया है, सभी प्रमाण प्रेरित यूहन्ना की ओर संकेत करते हैं। संभव है कि दूसरा यूहन्ना ईस्वी 85-95 के बीच उसी समय में लिखा गया था जब यूहन्ना के अन्य पत्रों, यूहन्ना 1 और 3 को लिखा गया था, ।

लिखने का उद्देश्य:

1. 2 यूहन्ना की पुस्तक एक अत्यावश्यक निवेदन है कि यूहन्ना के इस पत्र के पाठक, परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु के प्रति अपने प्रेम को, एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा का पालन करते हुये और पवित्रशास्त्र की आज्ञाकारिता में जीवन जीते हुये, प्रगट करें।
2. 2 यूहन्ना की पुस्तक उन धोखा देने वालों के प्रति सावधान रहने के लिए एक शक्तिशाली चेतावनी भी है जिनका कहना था कि मसीह वास्तव में देह में पुनर्जीवित नहीं हुआ था।

मुख्य पद:

1. *''और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें; यह वही आज्ञा है जो तुम ने आरम्भ से सुनी है, और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।'' 2यूहन्ना 6*
2. *''अपने विषय में चौकस रहो, कि जो परिश्रम हमने किया है उसको तुम गंवा न दो, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ। जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।'' 2यूहन्ना 8-9*

संक्षिप्त सारांश:

1. 2यूहन्ना की पुस्तक ''चुनी हुई महिला और उसके बच्चों'' को संबोधित है। यह या तो कलीसिया में किसी महत्वपूर्ण स्थान पर कार्य करने वाली महिला

हो सकती है या फिर यह स्थानीय कलीसिया और उसकी मण्डली को बताने वाला कोई संकेत (कोड) हो सकता है। उन दिनों में जब मसीहियों को सताया जाता था, प्रायः इस तरह के अभिवादन कोड या संकेतों का उपयोग किया जाता था।

2. 2 यूहन्ना की पुस्तक विस्तृत रूप में उन धोखेबाजों के बारे में चेतावनी देने से संबंधित है जो मसीह की सही शिक्षा को नहीं सिखा रहे थे और इस विचार को प्रचलन में बनाए हुए थे कि यीशु वास्तव में देह में जी नहीं उठा था परन्तु वह मात्र आत्मा में जीवित हुआ था।
3. यूहन्ना इस बात से बहुत व्याकुल था कि सच्चे विश्वासियों को इन झूठे शिक्षकों के प्रति सावधान कर दे ताकि उनका उन झूठे शिक्षकों से कोई लेना देना न हो।

व्यावहारिक लागूकरणः

1. यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण है कि हम, उस प्रत्येक बात को जो अपने आपको ''मसीही'' होने का दावा करती हैं देखते हैं, सुनते हैं और पढ़ते हैं उसे पवित्रशास्त्र के साथ जांच लें।
2. इस बात पर बहुत ही अधिक दृढ़ता से बल देना चाहिये क्योंकि शैतान का सब से बड़ा हथियार धोखा है।
3. किसी नये और रोमांचक सिद्धांत के झांसे में आ जाना बहुत आसान है, जो पवित्रशास्त्र पर आधारित दिखता तो है परंतु जब निकटता से उसकी जांच की जाती है तो वह वास्तव में परमेश्वर के वचन से हट जाना होता है।
4. यदि जो हो रहा है वह पवित्रशास्त्र के साथ स्पष्टतया मेल नहीं खाता है तो वह झूठा और आत्मा की ओर से नहीं है, और हमें इससे कोई संबंध नहीं रखना चाहिए।

अध्याय 34

3 यूहन्ना

लेखक और लिखने की तिथि:
पुन: लेखक को ''प्राचीन'' के रूप में जाना गया है, परन्तु यह प्रेरित यूहन्ना ही है। संभव है कि 3 यूहन्ना ईस्वी 85-95 के बीच उसी समय में लिखा गया था जब यूहन्ना के अन्य पत्रों, यूहन्ना 1 और 2 को लिखा गया था, ।

लिखने का उद्देश्य: यूहन्ना के इस तीसरी पत्री को लिखने के तीन उद्देश्य हैं:

1. सर्वप्रथम, वह अपने प्रिय सहकर्मी गयुस की सराहना करने और उसे प्रोसाहित करने के लिये लिखता है। गयुस की सेवकाई यह थी कि वह उन मेहनती संदेशवाहकों का आतिथ्य सत्कार करने की सेवा करता था जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये जाते थे।
2. दूसरा, वह अप्रत्यक्ष रूप से दियुत्रिफेस, एक दबंग अगुवे के व्यवहार की निन्दा करता और उसे चिताता है जिसने एशिया क्षेत्र की एक कलीसिया पर अधिकार कर लिया था, और उसका व्यवहार प्रत्यक्ष रूप से उस सबके विरुद्ध था जिसका समर्थन प्रेरित और उसके सुसमाचार ने किया था।
3. तीसरा, वह दिमेत्रियुस के उदाहरण की प्रशंसा करता है जिसके बारे में सब की ओर से अच्छी गवाही मिली थी।

मुख्य पद:

1. *''मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि मैं सुनूं कि मेरे बच्चे सत्य पर चलते हैं। पद 4*
2. *''हे प्रिय, बुराई के नहीं पर भलाई के अनुयायी हो। जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा।'' पद 11*

संक्षिप्त सारांश:

1. यूहन्ना, मसीह में अपने इस अत्याधिक प्रिय भाई गयुस को, वैसे ही लिख रहा है जैसे वह प्राय: सत्य पर बल देकर लिखता था। गयुस इफिसुस के निकट के एक नगर का सामान्य धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। वह गयुस के द्वारा

की जाने वाली प्रचारकों की, चाहे वे उसके जाने-पहचाने हो या अनजान, देखभाल और आतिथ्य सत्कार सेवा के लिये उसकी बहुत प्रशंसा करता है। ये वे होते थे जिनका मिशन एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुसमाचार ले जाना होता था।

2. यूहन्ना उसे भलाई करते रहने और दियुत्रिफेस के समान बुराई की नकल न करने के लिये प्रोत्साहित करता है।
   क. दियुत्रिफेस ने एशिया की एक कलीसिया पर अपने नेतृत्व को स्थापित कर लिया था और यूहन्ना के प्रेरित होने के अधिकार को मानने से इन्कार किया था उसके पत्रों को अस्वीकार करते हुये उसके निर्देशों के प्रति समर्पित रहने से भी इन्कार किया था।
   ख. उसने यूहन्ना के विरुद्ध बुरी-बुरी बातें फैलाई थी और जिन लोगों ने यूहन्ना के संदेशवाहकों के प्रति सहायता और पहुनाई को दिखाया उन्हें कलीसिया से निकाल दिया था।
3. यूहन्ना अपने पत्र का समापन करने से पहले, दिमेत्रियुस के उदाहरण की प्रशंसा भी करता है, जिसके बारे में उसने अच्छी बातें सुनी थी।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. यूहन्ना, हमेशा की तरह, सुसमाचार के सत्य पर चलने के महत्व पर बल देता है।
2. हमारे सह-मसीहियों की पहुनाई करना, सहायता और प्रोत्साहन करना ये यीशु की शिक्षाओं के कुछ प्रमुख निर्देशों में से हैं, और गयुस इस सेवकाई का निस्संदेह एक उत्कृष्ट उदाहरण था।
3. हमें भी, पहुनाई करते हुये, वचन की सेवकाई करनेवालों का अपने घरों और कलीसियाओं में स्वागत करना चाहिये।
4. वैसे ही, हमें सर्वदा मात्र उन्हीं के उदाहरण पर चलने के लिए सावधान रहने की भी आवश्यकता है जिनकी बातें और कार्य सुसमाचार से मेल खाते हैं, और दियुत्रिफेस जैसे लोगों की पहचान रखने के योग्य होना चाहिये जिनका व्यवहार यीशु की शिक्षा से बिल्कुल अलग है।

अध्याय 35

यहूदा

लेखक और लिखने की तिथि:

1. पद 1, याकूब के भाई यहूदा को इस पत्री का लेखक बताता है। यह यहूदा संभवत: यीशु का सौतेला भाई था, ठीक वैसे ही जैसे यीशु का याकूब नामक एक सौतेला भाई था (मत्ती 13:55)। संभवत:, यहूदा दीनता और मसीह के प्रति सम्मान के कारण, स्वयं को उसके भाई के रूप में नहीं देखता।
2. यहूदा की पुस्तक ईस्वी 60 से 80 के बीच लिखी गई थी।

लिखने का उद्देश्य:

1. यहूदा की पुस्तक आज हमारे लिए एक महत्वपूर्ण पुस्तक है क्योंकि इसे अन्तिम समय के लिए लिखा गया है, कलीसिया के उस युग के अन्तिम समय के लिये जिसका आरंभ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था।
2. यहूदा की पुस्तक ही एक ऐसी पुस्तक है जो पूरी की पूरी धर्मत्याग के बारे में ही है। यहूदा लिखता है कि बुरे कार्य धर्मत्याग का प्रमाण हैं।
3. वह हमें विश्वास के लिए यत्न करने कहता है क्योंकि गेहूं के बीच जंगली बीज भी होते हैं। झूठे भविष्यद्वक्ता कलीसिया में हैं, और धर्मी जन खतरे में हैं।
4. यहूदा एक छोटी परन्तु पढ़ने के योग्य महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो आज हमसे संबंद्धित है।

मुख्य पद:

1. *''हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यंत परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैंने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।'' यहूदा 3*
2. *''अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है, उस एकमात्र परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी और युगानुयुग रहे।*

आमीन! यहूदा 24-25

संक्षिप्त सारांश:

1. पद 3 के अनुसार, यहूदा हमारे उद्धार के बारे में लिखने के लिये उत्सुक था, तथापि उसने अपने विषय को बदल दिया ताकि विश्वास के लिए यत्न करने के विषय में लिखे।
2. यहा "विश्वास" शब्द मसीह के द्वारा सिखाई गई उस संपूर्ण मसीही शिक्षा को सम्मिलित करता है जिसे बाद में प्रेरितों को सौंप दिया गया था।
3. यहूदा, झूठे शिक्षकों के बारे में सावधान करने के पश्चात् (पद 4-10), हमें यह परामर्श देता है कि हम आत्मिक युद्ध में कैसे सफल हो सकते हैं (पद 20-21)। यहा वह बुद्धि है जिसे ग्रहण करने और पकड़ें रहना हमारे लिये भला होगा जबकि इन दिनों हम अन्तिम समय से होकर जा रहे हैं।
4. यहूदा की पुस्तक 2 पतरस की पुस्तक से घनिष्ठता से संबंधित है। यह स्पष्ट नहीं कि यहूदा ने पतरस की सामग्री का उपयोग किया था या पतरस ने यहूदा की सामग्री का उपयोग किया था।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. यह छोटी पुस्तक अन्तिम समयों में रहने की अनेक अनकही चुनौतियों के लिए सुसज्जित होने में हमारी सहायता कर सकती है। आज के मसीहियों को झूठी शिक्षाओं से सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम परमेश्वर के वचन को सही से नहीं जानते हैं तो ये बड़ी आसानी से हमें धोखे में डाल सकती हैं।
2. हमें सुसमाचार को जानने की आवश्यकता है, ताकि उसकी रक्षा कर सकें और उसके समर्थन में बोल सकें; और हमें मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार करने की आवश्यकता है जिसका प्रमाण हमारा परिवर्तन जीवन होता है।
3. जो विश्वास खरा होता है वह सदैव मसीह के समान व्यवहार को दिखाता है। मसीह में हमारा जीवन हमारे उस ज्ञान को प्रदर्शित करनेवाला होना चाहिए जो सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता और पिता के अधिकार पर आधारित है, जो विश्वास को व्यावहारिक बनाता है।
4. हमें उसके साथ व्यक्तिगत संबंध रखने की आवश्यकता है; तब ही हम उसकी आवाज़ को इतनी अच्छी रीति से जान पाएंगे कि हम दूसरों के पीछे नहीं चलेंगे।

अध्याय 36

प्रकाशितवाक्य

लेखक और लिखने की तिथि:
प्रकाशितवाक्य 1:1, 4,9 और 22:8 पद, प्रेरित यूहन्ना को इसके लेखक के रूप में पहचानते हैं। इसे संभवत: ईस्वी 90 और 95 के बीच लिखा गया था।

लिखने का उद्देश्य:
यीशु मसीह का प्रकाशन यूहन्ना को परमेश्वर द्वारा दिया गया ''कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए।'' प्रकाशितवाक्य 1:1

मुख्य पद:

1. *''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ।'' प्रकाशितवाक्य 3:20*
2. *''फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली।'' प्रकाशितवाक्य 20:11*
3. *''फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। प्रकाशितवाक्य 21:1*

संक्षिप्त सारांश

1. प्रकाशितवाक्य, मसीह के लौटने से पहले के अन्तिम दिनों के और नये आकाश और नई पृथ्वी में प्रवेश किये जाने के बारे में, रंग-बिरंगे विस्तृत चित्रणों को बहुतायत से देता है।
2. प्रकाशितवाक्य का आरंभ एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को लिखे सात पत्रों से होता है। इसके पश्चात् आगे पृथ्वी पर उण्डेले जानेवाले विनाश की शृंखलाओं का; पशु के चिन्ह ''666''; हर-मगिदोन की लड़ाई; शैतान को बांधा जाना; प्रभु का शासन; महान श्वेत सिंहासन के समक्ष न्याय; और परमेश्वर के अनन्त नगर के स्वरूप का प्रकाशन होता है।

3. यीशु मसीह के बारे में की गई भविष्यद्वाणियों की पूर्ति होती है और उसके प्रभुत्व की अन्तिम पुकार हमें आश्वासन देती है कि वह शीघ्र लौटेगा।
4. यह पुस्तक हमें स्वर्ग और उसकी उस महिमा की छोटी-छोटी झलकियां देती है जो वहां हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। और शैतान के गिरने के और उस नर्क के बारे में भविष्यद्वाणियां करती है जहां वह और उसके दूत डाले जायेंगे।

पुराने नियम में अन्तिम समय की भविष्यद्वाणियाँ

1. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को और भी अच्छे से समझा जा सकता है यदि उसे पुराने नियम में पाई जाने वाली अन्तिम समय की भविष्यद्वाणियों के साथ जोड़कर देखा जाता है। उदाहरण के लिए, अध्याय 13 में पूर्ण रीति से बताए मसीह विरोधी के बारे में दानिय्येल 9:27 में भी बताया गया है।
2. पुराने नियम की अन्तिम समय की अन्य भविष्यद्वाणियां दानिय्येल अध्याय 7-12; यशायाह अध्याय 24-27; यहेजकेल अध्याय 37-41 और जकर्याह अध्याय 9:12 में मिलती हैं। ये सभी भविष्यद्वाणियाँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक साथ मिलती हैं।

व्यावहारिक लागूकरण:

1. क्या आपने मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है? यदि हां, तो आपको परमेश्वर के उस न्याय से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है जो सारे संसार का होने वाला है जैसा कि वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। न्यायी हमारी ओर है।
2. अन्तिम न्याय का आरंभ होने से पहले हमें अपने मित्रों और पड़ोसियों को परमेश्वर के मसीह में दिये जाने वाले अनन्त जीवन के बारे में बतना है।
3. इस पुस्तक की घटनाएं वास्तविक हैं। हमें अपने जीवनों को वैसे ही जीना है जैसे कि हम इस पर विश्वास करते हैं ताकि दूसरे लोग हमारे भविष्य से संबद्धित हमारे आनन्द पर ध्यान दें और उस नये और महिमामयी नगर में हमारे साथ होने की इच्छा करें।

अध्याय 37

निष्कर्ष

नया नियम परमेश्वर के मुक्तिदायी प्रेम और उद्धार का अद्‌भुत शुभ समाचार है।

1. नये नियम में ऐसे बहुत से पद हैं जो परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताते हैं: यूहन्ना 3:16
2. बाइबल भी हमें बताती है कि परमेश्वर प्रेम है। 1यूहन्ना 4:16
3. परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह की बलिदानात्मक मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा छुड़ाया है। इफिसियों 1:7
4. परमेश्वर का छुड़ाने वाला प्रेम और उद्धार उसे ग्रहण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपलब्ध है। रोमियों 10:9-10
5. परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो। 2 पतरस 3:9

अपने शिष्यों के लिए यीशु के प्रथम और अन्तिम शब्द:

1. सर्वप्रथम शब्द जो शिष्यों ने यीशु से सुने थे वे इसप्रकार थे: ''मेरे पीछे चले आओ, और मैं तुमको मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा। ''मत्ती 4:18-20
2. अंतिम शब्द, (स्वर्ग में उठाए जाने से पहले), जो शिष्यों ने यीशु से सुने थे वे इस प्रकार थे: ''जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।'' मत्ती 28:19-20
3. इस सच्चाई से, कि अपने शिष्यों के लिए यीशु के सर्वप्रथम और अन्तिम वचन परमश्वेर के राज्य में खोए हुओं को लाने के बारे में थे, यह दिखाई देता है कि उसका हृदय सारे संसार के लिए हैं। वह चाहता है कि हम ''मनुष्यों को पकड़ने वाले'' बनें, खोए हुओं को उसके उद्धार के लिए जीत लें और उन्हें शिष्य बनायें।

आशा और उद्धार के इस संदेश को हमें समस्त संसार तक पहुंचाना है।

1. **मत्ती** में हम पढ़ते हैं कि हमें ''जाकर सब जातियों के लोगों को चेला'' बनाना है। मत्ती 28:19-20
2. **मरकुस** में हम से ''सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार

प्रचार'' करने को कहा गया है। मरकुस 16:15

3. **लूका** में हम देखते हैं कि ''यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा।'' लूका 24:47
4. **यूहन्ना** में यीशु कहता है ''जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।'' यूहन्ना 20:21
5. **प्रेरितों के काम** में हम यीशु के निर्देशों को पढ़ते हैं कि हमें ''यरूशलेम में और सारे यहूदियां में और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक'' उसके गवाह होना है। प्रेरितों 1:8
6. **रोमियों** में ''जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें?'' रोमियों 10:14-15
7. **1 कुरिन्थियों** में ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं?'' 1 कुरिन्थियों 9:22ब
8. **2 कुरिन्थियों** में ''इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं।'' 2 कुरिन्थियों 5:20
9. पूरे नये नियम में हम मसीह के उद्धार के संदेश को संसार तक ले जाने के बहुत से प्रोत्साहनों को पाते हैं।

दौड़ को अच्छे से दौडें, क्योंकि मसीह का छुटकारा निकट है:

1. पौलुस हमारे जीवन की तुलना दौड़ को दौड़ने से करता है। इब्रानियों 12:1
2. आओ हम दौड़ें और दौड़ को अच्छे से पूरा करें; क्योंकि अन्त समय निकट है। लूका 21:28
3. बहुत जल्द हमारी दौड़ पूरी होगी, हमारा काम पूरा होगा, और हम अपने पिता परमेश्वर के साथ अपने अन्तिम पुरस्कार का आनन्द लेंगे। यूहन्ना 9:4